आषाढ़ कृष्ण - 9 ■ संवत 2081 ■ वर्ष - 11 ■ अंक - 331 ■ पृष्ठ - 8 ■ रु. 5/- चेन्नई » रविवार » 30-06-2024 ■ www.dakshinbharat.com ■ Email : chennai@dakshinbharat.com

दक्षिण भारत राष्ट्रमत

தக்ஷின் பாரத் ராஷ்ட்ரமத் | தினசரி ஹிந்தி நாளிதழ் | चेन्नई और बेंगलूरु से एक साथ प्रकाशित

5 कोई छात्र स्कूल से वंचित न रहे, यह देश की सबसे बड़ी सेवा होगी : योगी

6 फर्ज की राह में कुर्बानी देकर 'अमर' हो गए अमरदीप

7 'अश्वेतों' और 'लातिन अमेरिकियों' की नौकरियां छीन रहे हैं प्रवासी : ट्रंप

फर्स्ट टेक

बेंगलूरु में इस साल डेंगू से मौत का पहला मामला आया सामने

बेंगलूरु/भाषा। कर्नाटक के बेंगलूरु में शनिवार को डेंगू के कारण मौत का पहला मामला दर्ज किया गया। एक वरिष्ठ अधिकारी ने यह जानकारी दी। अधिकारी ने बताया कि मरने वाला व्यक्ति (27) बेंगलूरु के सी.वी. रमन नगर का रहने वाला था। बृहत बेंगलूरु महानगर पालिका के मुख्य स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. सैयद सिराजुद्दीन मदनी ने 'पीटीआई-भाषा' को बताया, ''उन्हें बुखार की शिकायत के बाद 25 जून को मणिपाल अस्पताल में भर्ती कराया गया था और 27 जून को मल्टीपल ऑर्गन डिसफंक्शन सिंड्रोम के साथ डेंगू के कारण उनकी मृत्यु हो गई।''

मोदी आठ जुलाई को जाएंगे रूस, ऑस्ट्रिया

नई दिल्ली/भाषा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी आठ से 10 जुलाई के दौरान रूस और ऑस्ट्रिया की यात्रा पर जाएंगे। सूत्रों के अनुसार मोदी आठ और नौ जुलाई को मॉस्को में रहेंगे जहां वह रूस के राष्ट्रपति व्लादीमिर पुतिन के साथ 23वीं भारत रूस वार्षिक शिखर बैठक में भाग लेंगे। मोदी नौ जुलाई और 10 जुलाई को ऑस्ट्रिया की राजधानी विएना में रहेंगे। बीते चार दशकों में किसी भारतीय प्रधानमंत्री की यह पहली ऑस्ट्रिया यात्रा होगी।

'ताइवान के आसपास मंडरा रहे हैं चीन के विमान'

ताइपेई/भाषा। ताइवान की सेना ने द्वीप के करीब मंडरा रहे चीन के पीपुल्स लिबरेशन आर्मी (पीएलए) के 23 विमानों और पांच जहाजों का पता लगाया है। ताइवान के रक्षा मंत्रालय ने शनिवार को 'एक्स' पर कहा, सुबह छह बजे तक ताइवान के आसपास चीन के 23 विमान और पांच जहाजों का पता चला। बीस विमान ताइवान के उत्तरी, मध्य, दक्षिण-पश्चिम और पूर्वी हवाई क्षेत्र में प्रवेश कर गए। इवान के सशस्त्र बलों ने स्थिति की निगरानी की है और प्रतिक्रिया दी है।

पाकिस्तान में बंदूकधारियों ने चार श्रमिकों को अगवा किया

पेशावर/भाषा। पाकिस्तान के अशांत खैबर पख्तूनख्वा प्रांत में शनिवार को कुछ अज्ञात बंदूकधारियों ने कम से कम चार श्रमिकों का अपहरण कर लिया। एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने यह जानकारी दी। यह घटना प्रांत के टांक जिले में उस समय घटी जब श्रमिक एक बिजली के खंभे पर काम कर रहे थे। जिला पुलिस अधिकारी अब्दुस सलाम खालिद ने बताया, ''कुछ अज्ञात बंदूकधारियों ने शनिवार को उत्तर-पश्चिमी पाकिस्तान के अशांत जिले से 13 श्रमिकों का अपहरण कर लिया।

30-06-2024 सूर्यास्त 6:39 बजे | 01-07-2024 सूर्योदय 5:46 बजे

BSE	NSE
79,032.73	24,010.60
(-210.45)	(-33.90)

सोना	चांदी
7,438 रु.	94,500 रु.
(24 कैरेट) प्रति ग्राम	प्रति किलो

मिशन मंडेला
दक्षिण भारत राष्ट्रमत
दक्षिण भारत का लोकप्रिय हिन्दी दैनिक
epaper.dakshinbharat.com

कैलाश मण्डेला, मो. 9828233434

सदन मर्यादा

सांसद ही यदि गंभीर नहीं,
तो ख़तरे में है संविधान।
बीते कल पर कर-कर स्यापा,
मत बोलो कड़वी अब जबान।
फिर से ना हो आपातकाल,
करिए मिल ऐसा प्रावधान।
मर्यादा रखें सदन की सब,
रखिए जनमत का सही मान।।

भारत बना टी20 विश्व चैंपियन

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बारबाडोस/एजेन्सी। एक अरब 40 करोड़ भारतीयों की दुआओं और उम्मीदों पर खरा उतरते हुये रोहित शर्मा की अगुवाई वाली टीम ने एकजुटता,साहस और संयम के तालमेल का अदभुद प्रदर्शन करते हुये शनिवार को दक्षिण अफ्रीका को रोमांचक मुकाबले में सात रन से हरा कर टी20 विश्वकप 17 साल बाद भारत की झोली में डाल दिया।

इससे पहले भारत के हाथ आईसीसी एक दिवसीय वर्ल्ड कप 2011 में आया था जिसके बाद भारत ने 2013 में चैंपियंस ट्राफी अपने नाम की थी। इस लिहाज से भारत के हाथ 11 साल बाद कोई आईसीसी ट्राफी हाथ आयी है। रोहित शर्मा और विराट कोहली के लिये यह विश्वकप काफी अहम था क्योंकि दोनो ही दिग्गज खिलाड़ी जल्द ही टी20 फार्मेट से सन्यास ले सकते हैं। कोच राहुल द्रविड़ के लिये भी यह विश्वकप काफी मायने रखता था। द्रविड़ की कप्तानी भारत 2007 में एक दिवसीय विश्वकप में ग्रुप चरण में ही बाहर हो गया था। भारत ने टॉस जीत कर पहले बल्लेबाजी करते हुये सात विकेट पर 176 रन बनाये जिसके जवाब में दक्षिण अफ्रीका की टीम आठ विकेट पर 169 रन ही बना सकी। 17 साल बाद यह पहला मौका है जब भारत ने टी20 विश्वकप को अपने नाम किया है। इससे पहले महेन्द्र सिंह धोनी की अगुवाई में 2007 में भारत ने पहली बार टी20 का विश्वकप जीता था। हाइनरिक क्लासन (52) और डेविड मिलर (21) की जाबांज बल्लेबाजी की बदौलत दक्षिण अफ्रीका आसानी से भारत द्वारा दिये गये लक्ष्य के करीब पहुंच रहा था और उसे 30 गेंदों पर 30 रन की दरकार थी। इस नाजुक मौके पर हार्दिक पांड्या (20 रन पर तीन विकेट) ने क्लासन का विकेट चटका कर भारत की उम्मीदों को हवा दी।

चैंपियंस! हमारी टीम शानदार अंदाज में टी-20 विश्व कप लेकर आई है। हमें भारतीय क्रिकेट टीम पर गर्व है। उन्होंने उस रोमांचक मैच को ऐतिहासिक बताया जिसमें भारत ने दृढ़ निश्चयी दक्षिण अफ्रीकी टीम को मात दी। 140 करोड़ से अधिक भारतीय हमारे सभी क्रिकेटर्स के प्रदर्शन पर गर्व महसूस कर रहे हैं। उन्होंने मैदान में कप जीता है, और देश के हर गांवों और गलियों में करोड़ों भारतीयों का दिल जीता है।

– प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी

विराट कोहली ने टी20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास लिया

स्टार बल्लेबाज विराट कोहली ने भारत को दूसरा टी20 विश्व कप दिलाने में सूत्रधार की भूमिका निभाने के बाद टी20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट को अलविदा कह दिया। कोहली ने 59 गेंद में दो छक्कों और छह चौकों की मदद से 76 रन बनाये और दक्षिण अफ्रीका पर फाइनल में सात रन से मिली जीत में प्लेयर आफ द मैच रहे। पुरस्कार लेने के बाद उन्होंने कहा कि यह उनका आखिरी टी20 अंतरराष्ट्रीय मैच था। उन्होंने कहा,''यह मेरा आखिरी टी20 विश्व कप है। हम इसे जीतना चाहते थे।'' उन्होंने कहा,'' एक दिन आपको ऐसा लगता है कि आप रन नहीं बना पा रहे और ऐसा होता है। ईश्वर महान है। यह अभी नहीं तो कभी नहीं वाली स्थिति थी। यह भारत के लिये मेरा आखिरी टी20 मैच था।''

पूर्वी लद्दाख में श्योक नदी में टी-72 टैंक बह जाने से पांच सैनिकों की मौत

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/लेह/भाषा। पूर्वी लद्दाख के न्योमा-चुशुल क्षेत्र में वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) के निकट श्योक नदी में शुक्रवार देर रात अचानक आई बाढ़ के कारण रूस निर्मित टी-72 टैंक के बह जाने से उसमें सवार एक 'जूनियर कमीशंड ऑफिसर' (जेसीओ) समेत पांच सैन्यकर्मियों की मौत हो गई। अधिकारियों ने यह जानकारी दी।

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने इस हादसे के बाद, सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर एक पोस्ट के जरिये शोक व्यक्त किया।

अधिकारियों ने बताया कि दो टी-72 टैंक रात लगभग एक बजे श्योक नदी को पार करने की कोशिश कर रहे थे और उनमें से एक नदी के तेज बहाव में फंस गया। उन्होंने कहा कि बर्फ पिघलने से नदी के जल स्तर में वृद्धि हुई। सेना ने बचाव दल तैनात किया, लेकिन नदी में बढ़ते जलस्तर के कारण अभियान सफल नहीं हो सका। मारे गये कर्मियों में एमआरके रेड्डी, सुभान खान, भूपेन्द्र नेगी, ई तेइबम और सादरबोनिया नागराजू शामिल हैं।

सिंह ने कहा, ''लद्दाख में एक टैंक को नदी पार कराते समय हुए दुर्भाग्यपूर्ण हादसे में भारतीय सेना के हमारे पांच बहादुर जवानों की जान जाने से मुझे गहरा दुख हुआ है।'' उन्होंने कहा, ''हम अपने वीर जवानों द्वारा देश के लिए की गई अनुकरणीय सेवा को कभी नहीं भूलेंगे। शोक संतप्त परिवारों के प्रति मेरी हार्दिक संवेदनाएं।'' सिंह ने कहा, ''दुख की इस घड़ी में राष्ट्र उनके साथ खड़ा है।''

ये सैनिक 52 आर्मर्ड रेजिमेंट के थे, जो चीन के साथ लगती वास्तविक नियंत्रण रेखा के निकट रणनीतिक रूप से स्थित क्षेत्र में दौलत बेग ओल्डी (डीबीओ) सैन्य अड्डे पर तैनात थे।

पूरा देश लद्दाख में हादसे में मारे गये जवानों के परिवारों के साथ है : शाह

नई दिल्ली/भाषा। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने शनिवार को लद्दाख में अचानक आई बाढ़ में सैनिकों की मौत पर दुख व्यक्त किया और कहा कि पूरा देश उनके परिवारों के साथ है। पूर्वी लद्दाख में एक टैंक को श्योक नदी पार कराने की कोशिश के दौरान सेना के पांच जवानों की मौत हो गई। शाह ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर लिखा, ''लद्दाख में सैन्य अभ्यास के दौरान हुए हादसे की सूचना से मन व्यथित है। इस हादसे में अपना जीवन गंवाने वाले वीर जवानों के परिजनों के प्रति संवेदनाएं व्यक्त करता हूं। पूरा देश वीर जवानों के परिजनों के साथ है।''

मुलाकात

नई दिल्ली में शनिवार को कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्दरामैया ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से मुलाकात कर राज्य की महत्वपूर्ण परियोजनाओं को मंजूरी देने का अनुरोध किया। इस मौके पर उपमुख्यमंत्री डीके शिवकुमार, मंत्री एचसी महादेव प्रसाद, डॉ. जी परमेश्वर आदि उपस्थित थे।

अमरनाथ यात्रा : पहले दिन तेरह हजार से अधिक तीर्थयात्रियों ने किये दर्शन

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

श्रीनगर/जम्मू/भाषा। दक्षिण कश्मीर हिमालय में कड़ी सुरक्षा में हो रही वार्षिक तीर्थयात्रा के पहले दिन शनिवार को 13,000 से अधिक तीर्थयात्रियों ने पवित्र अमरनाथ गुफा मंदिर में दर्शन किए।

तीर्थयात्रियों का पहला जत्था 3,880 मीटर की ऊंचाई पर स्थित अमरनाथ गुफा मंदिर की यात्रा शुरू करने के लिए बालटाल और नुनवान स्थित दो आधार शिविरों से रवाना हुआ।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अमरनाथ यात्रा आरंभ होने पर तीर्थयात्रियों को शुभकामनाएं दीं और कहा कि बाबा बर्फानी के दर्शन कर शिवभक्तों में असीम ऊर्जा का संचार होता है।

प्रधानमंत्री ने 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा, ''पवित्र अमरनाथ यात्रा आरंभ होने पर सभी तीर्थयात्रियों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं। बाबा बर्फानी के दर्शन और वंदन से जुड़ी यह यात्रा शिवभक्तों में असीम ऊर्जा का संचार करने वाली होती है। उनकी कृपा से सभी श्रद्धालुओं का कल्याण हो, यही कामना है। जय बाबा बर्फानी।''

गृहमंत्री अमित शाह ने कहा कि केंद्र सरकार अमरनाथ गुफा मंदिर की सुरक्षित, सुगम और सुखद तीर्थयात्रा सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध है तथा श्रद्धालुओं को किसी तरह की असुविधा का सामना न करना पड़े, इसके लिए हरसंभव प्रबंध कर रही है। शाह ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा, ''श्री अमरनाथ यात्रा भारतीय संस्कृति की पारंपरिकता व अविरलता का शाश्वत प्रतीक है। आज से इस दिव्य यात्रा का शुभारंभ हो रहा है।

एनटीए ने तीन महत्वपूर्ण परीक्षाओं की नई तारीखों की घोषणा की

नई दिल्ली/भाषा। राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी (एनटीए) ने यूजीसी-नेट समेत रद्द और स्थगित की गई परीक्षाओं की नई तारीखों की घोषणा शुक्रवार रात को कर दी। परीक्षा की नई तारीखों की घोषणा इनके आयोजन में कथित अनियमितताओं को लेकर उठे विवाद के बीच की गई। यूजीसी-नेट परीक्षा 18 जून को आयोजित की गई थी लेकिन एक दिन बाद ही इसे रद्द कर दिया गया था। यह परीक्षा अब नए सिरे से 21 अगस्त से चार सितंबर तक आयोजित की जाएगी।

भारतीय समाज परिवार केंद्रित है : मोहन भागवत

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

मुंबई/भाषा। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) प्रमुख मोहन भागवत ने शनिवार को कहा कि पश्चिमी सभ्यता व्यक्तिवाद को प्राथमिकता देती है जबकि भारतीय समाज परिवार को केंद्र में रखता है।

भाजपा विधायक अमीत सातम द्वारा लिखित पुस्तक के विमोचन के अवसर पर संबोधित करते हुए आरएसएस प्रमुख ने कहा कि माता-पिता को अपने बच्चों पर विशिष्ट क्षेत्र में करियर बनाने की बात नहीं थोपनी चाहिए तथा संगीत या पाक कला जैसे शौक को आगे बढ़ाना भी उतना ही संतुष्टिदायक होगा।

भागवत ने बताया कि माता-पिता, विशेषकर उच्च शिक्षित पृष्ठभूमि वाले माता-पिता, अक्सर अपने बच्चों पर उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए दबाव डालते हैं। उन्होंने कहा, ''पश्चिमी संस्कृतियों में, व्यक्ति को मौलिक इकाई माना जाता है, जहां व्यक्तिवाद पर अधिक जोर रहता है। इसके विपरीत, हमारा समाज परिवार को केंद्र में रखता है। एक मजबूत परिवार इकाई एक मजबूत समाज का आधार बन सकती है। हमारे समाज का स्वरूप स्वाभाविक रूप से दूसरों की मदद करने वाला है।''

उन्होंने अभिभावकों से आग्रह किया कि वे अपने बच्चों को बेहतर तरीके से कमाने की सीख दें तथा उन्हें समाज की बेहतरी के लिए इसका कुछ हिस्सा योगदान करने के लिए प्रोत्साहित करें।

अवैध कॉल सेंटर का पर्दाफाश, 70 से अधिक लोग गिरफ्तार

नोएडा (उप्र)/भाषा। नोएडा में पुलिस ने अमेरिका में रहने वाले लोगों के साथ ठगी करने वाले एक कॉल सेंटर का पर्दाफाश किया तथा इस सिलसिले में 70 से अधिक लोगों को गिरफ्तार किया। पुलिस ने यह जानकारी दी। अपर पुलिस उपायुक्त हृदयेश कठेरिया ने बताया कि सेक्टर 142 थानाक्षेत्र में यह कॉल सेंटर सेक्टर 90 स्थित भूटानी एंथम परिसर में चल रहा था जहां से पुलिस ने 73 लोगों को गिरफ्तार किया है। उनके अनुसार उनमें 40 पुरुष एवं 33 महिलाएं हैं। उन्होंने बताया कि इस गैंग का सरगना फरार है। कठेरिया के अनुसार मौके से 14 मोबाइल फोन, 73 कंप्यूटर, तीन राउटर, 48 हजार रुपए नगद, 58 'प्रिंट आउट' आदि मिले हैं। उन्होंने बताया कि जांच के दौरान सामने आया कि ये लोग अमेरिकी लोगों के कंप्यूटर और लैपटॉप में 'वायरस' डालकर तथा उन्हें विभिन्न प्रकार से डरा-धमकाकर अपने झांसे में लेते थे और उनसे ठगी करते थे।

जहरीली शराब त्रासदी की जिम्मेदारी पुलिस, जिला पुलिस अधीक्षक पर होगी : स्टालिन

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

चेन्नई/भाषा। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम के स्टालिन ने शनिवार को विधानसभा में कहा कि जहरीली शराब त्रासदी की जिम्मेदारी जिला पुलिस अधीक्षक और स्थानीय पुलिस अधिकारी की होगी। स्टालिन ने विपक्षी 'आल इंडिया अन्ना द्रविड़ मुनेत्र कषगम' (अन्नाद्रमुक) पर लोकसभा चुनाव में अपने खराब प्रदर्शन और पार्टी के भीतर संकट को छिपाने के लिए कल्लाकुरिची जहरीली शराब त्रासदी का मुद्दा उठाने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार के पास कल्लाकुरिची जहरीली शराब की घटना के बारे में छिपाने के लिए कुछ भी नहीं है। उन्होंने कहा कि विपक्षी पार्टी की सीबीआई (केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो) जांच की मांग अनावश्यक है, क्योंकि उनकी सरकार ने घटना पर त्वरित कार्रवाई की है और अपराधियों को गिरफ्तार किया है, अधिकारियों को स्थानांतरित किया है, जांच आयोग का गठन किया है और अपराध शाखा सीआईडी द्वारा जांच का आदेश दिया है।

मुख्यमंत्री ने कहा, ''हमने ऐसी स्थिति उत्पन्न कर दी है, जहां कोई बच नहीं सकता। इन सभी प्रयासों के बावजूद, वह भी 24 घंटे के भीतर, अन्नाद्रमुक सीबीआई जांच पर जोर दे रही है।

सहज स्मृति योग

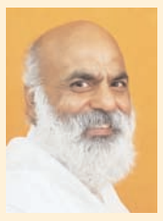

व्यक्ति के मन में जो आध्यात्मिक प्रश्न उठते हैं उनका इस स्तंभ में समाधान प्रस्तुत करने का काम कर रहे हैं गुरुजी श्री नंदकिशोर तिवारी। व्यक्ति की पृष्ठभूमि चाहे किसी भी मत, सम्प्रदाय, मज़हब से हो, सहज स्मृति योग का सरोकार मनुष्य के मात्र आत्मवान होने से है। इसलिए सहज स्मृति योग का ध्यान केवल जिज्ञासु के समाधान पर रहता है। आप भी अपनी जिज्ञासाएं guruji@darpanfoundation.com पर ईमेल या व्हाटस अप (9902912396) द्वारा भेज सकते हैं।

प्रश्न: गुरु जी, कोई मनुष्य चाहे जिस किसी भी देश, नस्ल, लिंग, धर्म मज़हब, रिलीजन, पंथ, वाद से ताल्लुक़ रखता हो, नास्तिक हो फिर भी सत्य तो सबको ही समान रूप से स्वीकार्य होता है। सब ही घोषित रूप से सत्य ही बोलना सुनना समझना चाहते हैं ।झूठ के संग कौन मतिमान व्यक्ति होना चाहता होगा भला ? फिर कॉर्पोरेट वर्ल्ड में सत्य के संग होने में अर्थात् सत्संग का नाम लेते ही लोगों के नाक-भौं क्यों सिकोड़ते देखा जाता है?

उत्तर: ऐसा इसलिए है क्योंकि सत्संग शब्द का अर्थ समाज में केवल उन गतिविधियों और आयोजनों के संदर्भ में रूढ़ हो कर सिमट गया है जिनमें लोग पारायण, भजन, कीर्तन, प्रवचन सुनते करते हैं । वह सत्संग भक्तियोग मार्ग के पथिकों के लिए है। पर एक शिक्षित समाज में यथार्थ सत्संग तो सभी समसामयिक, वैज्ञानिक, सामाजिक विषयों से लेकर गूढ़ आध्यात्मिक अनुभूतियों पर पारस्परिक संवाद की निरंतरता को कहेंगे। स्वाध्याय, सेवा-कार्य, मनन, ज्ञान, ध्यान, समाधि आदि सभी सत्संग के विभिन्न रूप हैं। अपने परम अर्थ में सत्संग परम सत्य को हम जिस किसी नाम या अनुभव या अनुभूति में जानते हों, उसी के साथ सतत संयुक्त चित्त रहने को कह सकते हैं।आर्टिफ़ीशियल इंटेलिजेंस वाले वर्तमान वैश्विक चेतना का यह युग या काल, व्यवहार में सत्संग की पुनर्परिभाषा की माँग कर रहा है।

हरियाणा में नायब सैनी के नेतृत्व में अकेले चुनाव लड़ेगी भाजपा, फिर बनायेगी सरकार : अमित शाह

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

चंडीगढ़/भाषा। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने शनिवार को कहा कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के नेतृत्व में आगामी हरियाणा विधानसभा चुनाव अकेले लड़ेगी। उन्होंने विश्वास जताया कि पार्टी लगातार तीसरी बार पूर्ण बहुमत के साथ राज्य की सत्ता में आएगी।

यहां पंचकूला में पार्टी की विस्तारित प्रदेश कार्यकारिणी की बैठक के दौरान भाजपा नेताओं और कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि इस बात को लेकर कोई संदेह नहीं होना चाहिए कि भाजपा इस साल अक्टूबर से पहले होने वाले राज्य चुनाव के लिए कोई गठबंधन नहीं करेगी। पार्टी सूत्रों ने शाह के हवाले से बताया कि पार्टी को किसी बैसाखी की जरूरत नहीं है। शाह ने कार्यकर्ताओं से कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन और मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के नेतृत्व में भाजपा हरियाणा में तीसरी बार पूर्ण बहुमत के साथ सरकार बनाएगी। हरियाणा भाजपा ने 'एक्स' पर पोस्ट किया कि गृह मंत्री ने पार्टी कार्यकर्ताओं का आभार व्यक्त किया और कहा कि हरियाणा के लोगों ने मोदी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। मीडिया को बैठक की कार्यवाही कवर करने की अनुमति नहीं दी गई। इस वर्ष मार्च में भाजपा ने मनोहर लाल खट्टर की जगह ओबीसी नेता नायब सिंह सैनी को हरियाणा का मुख्यमंत्री बनाया था। भाजपा नेता किरण चौधरी ने कहा कि अपने संबोधन के दौरान शाह ने पार्टी कार्यकर्ताओं में नया जोश और उत्साह भरा।

ताऊ देवी लाल स्टेडियम में आयोजित सत्र के दौरान केंद्रीय शिक्षा मंत्री एवं हरियाणा के लिए भाजपा के चुनाव प्रभारी धर्मेंद्र प्रधान, सह-प्रभारी बिप्लब कुमार देब, मुख्यमंत्री सैनी, पूर्व मुख्यमंत्री एवं केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल खट्टर और वरिष्ठ नेता सौदान सिंह मौजूद थे। इस मौके पर राज्यसभा सदस्य सुभाष बराला, लोकसभा सांसद नवीन जिंदल और धर्मबीर सिंह, हरियाणा विधानसभा अध्यक्ष ज्ञान चंद गुप्ता और पूर्व सांसद कुलदीप बिश्नोई भी मौजूद थे।

वरिष्ठ नेता ओपी धनखड़, रामबिलास शर्मा, मंत्री मूलचंद शर्मा, जेपी दलाल, कंवर पाल, असीम गोयल, विधायक एवं पूर्व मंत्री अनिल विज सहित अन्य नेता भी मौजूद थे। बैठक में राज्य स्तर के वरिष्ठ भाजपा नेता, पदाधिकारी और सभी 90 विधानसभा क्षेत्रों से लगभग 4,500 पार्टी कार्यकर्ता शामिल हुए। बैठक के बाद शाह ने राज्य इकाई के पदाधिकारियों से भी मुलाकात की। पार्टी ने कार्यक्रम स्थल पर एक प्रदर्शनी का भी आयोजन किया है।

अदालत ने एफसीआरए के तहत वन्यजीव अध्ययन केंद्र का पंजीकरण रद्द करने का आदेश खारिज किया

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बेंगलूरु। कर्नाटक उच्च न्यायालय ने गृह मंत्रालय द्वारा विदेशी योगदान (विनियमन) अधिनियम (एफसीआरए) के तहत सेंटर फॉर वाइल्डलाइफ स्टडीज (सीडब्ल्यूएस) का पंजीकरण रद्द करने संबंधी आदेश को निरस्त कर दिया है। वैज्ञानिक के उल्लास कारंत द्वारा स्थापित, बेंगलूरु स्थित सीडब्ल्यूएस को पांच मार्च, 2021 को एफसीआरए के तहत ''पंजीकरण के निलंबन'' का सामना करना पड़ा।

इस निलंबन को बढ़ा दिया गया और बाद में तीन दिसंबर, 2021 को गृह मंत्रालय द्वारा जारी कारण बताओ नोटिस के बाद चार सितंबर, 2023 को पंजीकरण रद्द कर दिया गया। सीडब्ल्यूएस ने पंजीकरण रद्द करने का विरोध करते हुए तर्क दिया कि यह तर्कसंगत नहीं है और ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित दिवंगत के शिवराम कारंत के पुत्र को एफसीआरए की धारा 14(2) के तहत अनिवार्य रूप से व्यक्तिगत सुनवाई का अवसर नहीं दिया गया। गृह मंत्रालय ने इसका विरोध करते हुए कहा कि पंजीकरण रद्द करने से पहले व्यक्तिगत सुनवाई का अवसर दिए जाने की आवश्यकता नहीं है। कर्नाटक उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति एम. नागप्रसन्ना ने कहा कि धारा 14(2) पंजीकरण रद्द करने की अनुमति देती है, वहीं धारा 14(3) संस्था को तीन साल तक फिर से पंजीकरण करने से रोकती है। न्यायाधीश ने हाल में दिए गए आदेश में कहा, ''अधिनियम में वर्णित शब्द सुनवाई का उचित अवसर' को केवल कारण बताओ नोटिस जारी करने तक सीमित नहीं किया जा सकता, बल्कि अधिनियम की धारा 14 की उपधारा (3) की विशिष्टता के कारण मामले के विशिष्ट तथ्यों पर याचिकाकर्ता को व्यक्तिगत सुनवाई का अवसर अवश्य दिया जाना चाहिए।'' अदालत ने कहा कि याचिकाकर्ता को व्यक्तिगत सुनवाई का मौका न देने से यह आदेश निष्प्रभावी हो गया है।

प्रधानमंत्री मोदी ने अमरनाथ तीर्थयात्रियों को शुभकामनाएं दीं

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शनिवार को अमरनाथ यात्रा आरंभ होने पर तीर्थयात्रियों को शुभकामनाएं दीं और कहा कि बाबा बर्फानी के दर्शन कर शिवभक्तों में असीम ऊर्जा का संचार होता है। अधिकारियों ने बताया कि 52 दिन की वार्षिक अमरनाथ यात्रा शनिवार तड़के शुरू हो गई। उन्होंने बताया कि तीर्थयात्रियों का पहला जत्था बालटाल और नुनवान स्थित दो आधार शिविरों से दक्षिण कश्मीर हिमालय स्थित गुफा मंदिर के लिए रवाना हुआ। प्रधानमंत्री ने 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा, पवित्र अमरनाथ यात्रा आरंभ होने पर सभी तीर्थयात्रियों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं। बाबा बर्फानी के दर्शन और वंदन से जुड़ी यह यात्रा शिवभक्तों में असीम ऊर्जा का संचार करने वाली होती है। उनकी कृपा से सभी श्रद्धालुओं का कल्याण हो, यही कामना है। जय बाबा बर्फानी! यात्रा 19 अगस्त को संपन्न होगी।

नीट परीक्षा मामला: प्रधान ने कांग्रेस पर साधा निशाना, कहा- वह संसद में चर्चा से भागना चाहती है

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

चंडीगढ़/भाषा। केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने शनिवार को कांग्रेस पर निशाना साधते हुए कहा कि वह नीट परीक्षा मुद्दे पर संसद में चर्चा से भागना चाहती है। प्रधान की यह टिप्पणी लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी द्वारा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से नीट परीक्षा में कथित अनियमितताओं के मुद्दे पर संसद में सार्थक और अच्छी चर्चा कराने का आग्रह करने के एक दिन बाद आयी है।

नीट परीक्षा के मुद्दे पर विपक्ष द्वारा भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) नीत केंद्र पर निशाना साधे जाने के बारे में पूछे गए सवाल का जवाब देते हुए प्रधान ने कहा, कांग्रेस चर्चा नहीं चाहती। वह चर्चा से भागना चाहती है। उसका एकमात्र उद्देश्य अराजकता, भ्रम पैदा करना और पूरे संस्थागत तंत्र के सुचारू संचालन में बाधा उत्पन्न करना है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रपति ने भी संसद में अपने संबोधन में कांग्रेस द्वारा उठाए जा रहे नीट परीक्षा मुद्दे का उल्लेख किया था। उन्होंने कहा कि विपक्ष के पास राष्ट्रपति के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव पर चर्चा के दौरान इस मुद्दे को उठाने का मौका था। उन्होंने कहा कि सरकार किसी भी प्रकार की चर्चा के लिए तैयार है। पंचकूला में हरियाणा भाजपा की विस्तारित प्रदेश कार्यकारिणी की बैठक के पहले सत्र की समाप्ति के बाद प्रधान ने संवाददाताओं से कहा, लेकिन कांग्रेस इस मामले पर राजनीति करना चाहती है। यह राजनीति करने का समय नहीं है।

बंगाल के राज्यपाल ने आपत्तिजनक टिप्पणी के लिए ममता के खिलाफ मानहानि का मुकदमा दायर किया

कोलकाता/भाषा। पश्चिम बंगाल के राज्यपाल सी.वी. आनंद बोस ने शुक्रवार को कलकत्ता उच्च न्यायालय में मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के खिलाफ एक दिन पहले उनके द्वारा की गई उस टिप्पणी के खिलाफ मानहानि का मुकदमा दायर किया है, जिसमें उन्होंने कहा था कि महिलाओं ने उनसे शिकायत की है कि वे राजभवन में हालिया घटनाओं के कारण वहां जाने से डरती हैं। एक सूत्र ने यह जानकारी दी। राज्यपाल ने इससे पहले दिन में बनर्जी की टिप्पणी की आलोचना करते हुए कहा था कि जनप्रतिनिधियों से यह अपेक्षा की जाती है कि वह 'गलत और बदनामी वाली धारणा' न बनाएं।सूत्र ने बताया कि राज्यपाल ने उनके प्रति इसी तरह की टिप्पणी करने के संबंध मे तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) के नेताओं के खिलाफ मानहानि का मुकदमा दायर किया है।

राज्य सचिवालय में एक प्रशासनिक बैठक के दौरान मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने बृहस्पतिवार को दावा किया कि ''महिलाओं ने मुझसे शिकायत की है कि वे राजभवन में हाल ही में हुई घटनाओं के कारण वहां जाने से डर रही हैं।'' सूत्र ने 'पीटीआई-भाषा' को बताया, ''राज्यपाल सी.वी. आनंद बोस ने शुक्रवार को कलकत्ता उच्च न्यायालय का रुख किया और मुख्यमंत्री ममता बनर्जी तथा उनकी पार्टी के नेताओं द्वारा उनके खिलाफ की गई टिप्पणियों के लिए मानहानि का मुकदमा दायर किया।'' राजभवन की एक संविदा महिला कर्मचारी ने दो मई को राज्यपाल बोस पर छेड़छाड़ का आरोप लगाया था, जिसके बाद कोलकाता पुलिस ने इस मामले की जांच शुरू की।

दिल्ली पुलिस ने तीन घंटे तक कार का पीछा कर अगवा भाई-बहन को बचाया

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। दिल्ली पुलिस ने करीब तीन घंटे तक कार का पीछा करके लक्ष्मी नगर इलाके से अपहृत भाई-बहन को बचा लिया। अधिकारियों ने शनिवार को यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि आरोपियों ने भाई-बहन के माता-पिता से 50 लाख रुपये की फिरौती मांगी थी।

पुलिस उपायुक्त (पूर्व) अपूर्वा गुप्ता ने बताया कि पुलिस को शुक्रवार रात 11:30 बजे एक लड़के (3) और एक लड़की (11) का उनकी ही कार में अपहरण किये जाने की सूचना मिली थी। गुप्ता ने कहा कि भाई-बहन के पिता ने पुलिस को बताया कि बद्दे शकरपुर इलाके में विकास मार्ग पर एक मशहूर मिठाई की दुकान के सामने कार में बैठे थे। उन्होंने बताया कि वह और उनकी पत्नी मिठाई खरीदने के लिए दुकान के अंदर गए थे, तभी एक व्यक्ति पार्किंग कर्मचारी होने की आड़ में उनकी कार में आकर बैठ गया। उन्होंने बताया कि आरोपी कार को लेकर फरार हो गया, जिसमें दोनों बद्दे बैठे थे। उपायुक्त ने बताया कि आरोपी ने बच्चों को डराकर शांत रहने को कहा। उन्होंने बताया कि गाड़ी चलाते समय आरोपी ने दूसरे मोबाइल फोन से दंपति को फोन किया और 50 लाख रुपये की फिरौती मांगी।

कर्नाटक पुलिस ने मेडिकल कॉलेज में प्रवेश के नाम पर ठगी के आरोपी को मुंबई में किया गिरफ्तार

बेलगाम/मुंबई। कर्नाटक पुलिस ने मेडिकल कॉलेज में प्रवेश का झांसा देकर कई लोगों को ठगने के आरोपी 47-वर्षीय एक व्यक्ति को मुंबई से गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने यह जानकारी दी है। पुलिस ने बताया कि मूलरूप से कर्नाटक के बेलगाम निवासी ओरगंडा अरविंद कुमार को शहर के साकीनाका क्षेत्र में उनके 'करियर काउंसलिंग सेंटर' से हिरासत में लिया है। पिछले साल पड़ोसी राज्य में उनके खिलाफ दर्ज धोखाधड़ी के एक मामले में उन्हें गिरफ्तार किया गया था। कुमार ने शिकायतकर्ता से मेडिकल कॉलेज में सीट सुनिश्चित करने के लिए रुपये लिये थे, लेकिन प्रवेश नहीं मिला।

'लड़की बहिन' योजना के लिए आदेश जारी, लाभार्थियों की वार्षिक पारिवारिक आय सीमा 2.5 लाख तय

मुंबई/भाषा। महाराष्ट्र सरकार द्वारा जारी एक सरकारी प्रस्ताव में कहा गया है कि 'मुख्यमंत्री माझी लड़की बहिन योजना' के लाभार्थियों की वार्षिक पारिवारिक आय 2.5 लाख रुपये से अधिक नहीं होनी चाहिए। उपमुख्यमंत्री अजित पवार ने विस में राज्य का बजट पेश करते वक्त इस योजना की घोषणा की जिसका उद्देश्य 21-60 आयु वर्ग की विवाहित, तलाकशुदा और निराश्रित महिलाओं को 1,500 रुपये प्रति माह प्रदान करना है। इस संबंध में सरकारी आदेश 28 जून को जारी किया गया जिसके अनुसार लाभार्थी महिला का बैंक में खाता होना चाहिए, उसके पास आधार कार्ड या राशन कार्ड होना चाहिए तथा उसे राज्य का निवासी होना चाहिए। सरकारी आदेश में कहा गया, ''लाभार्थी को सक्षम प्राधिकारी से 2.5 लाख रु. (वार्षिक पारिवारिक आय मानदंड) का आय प्रमाणपत्र प्राप्त करना होगा। वे ऑनलाइन आवेदन कर सकती हैं। आंगनवाड़ी सेविका अथवा ग्राम सेवक ग्रामीण क्षेत्रों में ऑनलाइन फॉर्म स्वीकार करेंगे, सत्यापि, और पोर्टल पर अपलोड करेंगे, जबकि शहरी क्षेत्रों में आंगनवाड़ी सेविका और वार्ड अधिकारी इस पर काम करेंगे।''

'नीट' राष्ट्रीय महत्व का मुद्दा, प्रधानमंत्री को संसद में जवाब देना चाहिए : तनुज पुनिया

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। कांग्रेस सांसद तनुज पुनिया ने शनिवार को कहा कि मेडिकल प्रवेश परीक्षा नीट-यूजी में कथित अनियमितता राष्ट्रीय महत्व का विषय है और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को संसद में आकर इस बारे में जवाब देना चाहिए। उन्होंने यह दावा किया कि सरकार इस मामले पर चर्चा से भाग रही है क्योंकि उसे पता है कि चर्चा होने पर उससे जुड़े लोग बेनकाब हो जाएंगे।

राहुल गांधी ने सदन में इस विषय को उठाया और राष्ट्रपति के अभिभाषण से अलग इस विषय पर चर्चा की मांग की। हालांकि संसदीय कार्य मंत्री किरेन रीजीजू ने कहा कि राष्ट्रपति के अभिभाषण के बाद सबसे पहले इस पर लाए गए धन्यवाद प्रस्ताव पर चर्चा होती है और अलग से किसी विषय पर चर्चा की परंपरा नहीं रही है।

नीट के मामले पर विपक्षी सदस्यों के हंगामे के चलते लोकसभा की कार्यवाही एक बार के स्थगन के बाद सोमवार सुबह 11 बजे तक के लिए स्थगित कर दी गई। उत्तर प्रदेश के बाराबंकी से सांसद पुनिया ने 'पीटीआई-भाषा' से कहा, ''नीट बहुत महत्वपूर्ण मुद्दा है। इससे लाखों परिवार जुड़े हुए हैं। यह बहुत बड़ा घोटाला है। सिर्फ पेपर लीक नहीं हुआ है, बल्कि अंक देने में भी गड़बड़ियां पाई गई हैं। शुरू में शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने एनटीए को क्लीन चिट देने की कोशिश की।'' उन्होंने सवाल किया, ''क्या इतने महत्वपूर्ण मुद्दे पर संसद में चर्चा नहीं हो सकती? क्या प्रधानमंत्री और शिक्षा मंत्री संसद में जवाब नहीं दे सकते? यह देश के लिए उचित नहीं है कि अयोग्य लोग डॉक्टर बन जाएं और लोगों के स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ हो।'' कांग्रेस नेता ने दावा किया कि इस मामले में जिस तेज गति से कार्रवाई होनी चाहिए थी वो नहीं हुई। उनका कहना है कि इसलिए विपक्ष चाहता है कि सदन में अलग से चर्चा हो।

तनुज पुनिया ने आरोप लगाया कि सरकार चर्चा से भाग रही है ताकि उससे जुड़े लोगों की पोल न खुल जाए।

कोलकाता के छात्रावास में एक व्यक्ति की कथित तौर पर पीट-पीटकर हत्या, 14 गिरफ्तार

कोलकाता/भाषा। पश्चिम बंगाल के कोलकाता जिले के बउबाजार इलाके में स्थित एक सरकारी छात्रावास में शुक्रवार को मोबाइल फोन चोरी के संदेह में एक व्यक्ति की कथित तौर पर पीट-पीटकर हत्या कर दी गई। पुलिस ने यह जानकारी दी। पुलिस ने बताया कि पीड़ित की पहचान इरशाद आलम (37) के रूप में हुई है। वह बेलगछिया का रहने वाला था और चांदनी चौक इलाके में एक इलेक्ट्रॉनिक्स की दुकान पर मैकेनिक का काम करता था। एक पुलिस अधिकारी ने बताया कि इरशाद इससे पहले उदयन छात्रावास में एक टेलीविजन की मरम्मत करने के लिए गया था और वहां पिछले कुछ दिनों में मोबाइल गायब होने के चलते उसे आज सुबह फिर से छात्रावास बुलाया गया था। मृतक के परिजनों ने बताया कि इरशाद पर मोबाइल चोरी करने का आरोप लगाया गया और इसके कारण कथित तौर पर उसे बांधकर पीटा गया। मृतक के एक रिश्तेदार ने बताया, ''उसने हमें छात्रावास से फोन करके बताया था कि छात्र उस पर चोरी का आरोप लगाकर पैसे की मांग कर रहे हैं।'' घटना की सूचना मिलने के बाद पुलिस छात्रावास पहुंची।

महाराष्ट्र में मादक पदार्थों के कारोबार में शामिल लोगों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जायेगी: शिंदे

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

पुणे/भाषा। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने शनिवार को कहा कि किसी भी रूप में मादक पदार्थों का कारोबार राज्य में सहन नहीं किया जायेगा।

विपक्ष ने पुणे शहर के एक पब में कथित तौर पर मादक पदार्थों के सेवन के लिए कुछ लोगों की गिरफ्तारी के बाद मादक पदार्थों और अन्य प्रतिबंधित पदार्थों के बढ़ते इस्तेमाल को लेकर राज्य सरकार पर निशाना साधा है। शिंदे जिले के देहू में संत ज्ञानेश्वर महाराज की पालकी यात्रा में शामिल होने के बाद पत्रकारों से बात कर रहे थे।

मुख्यमंत्री ने कहा, ''महाराष्ट्र में किसी भी तरह के मादक पदार्थों के कारोबार को बर्दाश्त नहीं किया जायेगा। सरकार इस पर काम कर रही है और इसमें शामिल सभी लोगों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जायेगी।'' उन्होंने कहा, ''मैंने राज्य में स्कूलों और कॉलेजों के निकट स्थित पान की दुकानों को हटाने के आदेश दिए हैं। मैंने पुलिस से उन तस्करों का पता लगाने को भी कहा है जो युवा पीढ़ी को बर्बाद कर रहे हैं। जो अधिकारी (मादक पदार्थ मामलों की जांच करते समय) ढुलमुल रवैया अपनाएंगे, उन्हें निलंबन का सामना करना पड़ेगा।''

जम्मू-कश्मीर के पुंछ में गोलीबारी, कोई हताहत नहीं

मेंढर/जम्मू/भाषा। जम्मू-कश्मीर के पुंछ जिले में नियंत्रण रेखा (एलओसी) के पास गोलीबारी की सूचना है। आधिकारिक सूत्रों ने शनिवार को यह जानकारी दी। सूत्रों ने बताया कि शुक्रवार देर रात कृष्णा घाटी सेक्टर में एक अग्रिम भारतीय चौकी पर सीमा पार से गोलीबारी हुई, जिसके बाद नियंत्रण रेखा की सुरक्षा में तैनात सेना के जवानों ने जवाबी कार्रवाई की। उन्होंने बताया कि गोलीबारी में कोई हताहत नहीं हुआ। गोलीबारी कुछ देर तक जारी रही। सूत्रों ने बताया कि आतंकवादियों की घुसपैठ न हो यह सुनिश्चित करने के लिए चौकसी बढ़ा दी गई है।

ब्रिटेन में नई सरकार के कार्यभार संभालने के बाद एफटीए पर प्रगति की उम्मीद: गोयल

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने शनिवार को उम्मीद जताई कि ब्रिटेन में नई सरकार के कार्यभार संभालने के बाद उसके साथ प्रस्तावित मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) पर बातचीत आगे बढ़ेगी। ब्रिटेन में चार जुलाई को आम चुनाव होने हैं।

गोयल ने यहां संवाददाताओं से कहा, ब्रिटेन में चुनाव परिणाम चाहे जो भी हों, हम आशा करते हैं कि नई सरकार आने के बाद दोनों देशों के बीच एफटीए पर प्रगति होगी। उन्होंने कहा कि यदि ब्रिटेन में वर्तमान सरकार दोबारा सत्ता में आती है, तो वह पहले ही एफटीए के प्रति पूरी तरह प्रतिबद्ध हैं। उन्होंने कहा कि मंत्रालय ने लेबर पार्टी के के साथ विचार-विमर्श किया है और वे भी समझौते को शीघ्रता से आगे बढ़ाने के लिए समान रूप से इच्छुक हैं।

भारत और ब्रिटेन ने परस्पर आर्थिक संबंधों को बढ़ावा देने के लिए जनवरी, 2022 में एफटीए के लिए बातचीत शुरू की थी।

2024-25 में वस्तुओं, सेवाओं का निर्यात 800 अरब डॉलर से अधिक होने का भरोसा : गोयल

मुंबई/भाषा। वाणिज्य और उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने शनिवार को कहा कि वैश्विक चुनौतियों के बावजूद चालू वित्त वर्ष में भारत का वस्तुओं और सेवाओं का निर्यात 800 अरब डॉलर को पार कर जाने की उम्मीद है।

इससे पहले वित्त वर्ष 2023-24 में निर्यात 778.2 अरब डॉलर (वस्तुएं 437.1 अरब डॉलर और सेवाएं 341 अरब डॉलर) रहा था। उन्होंने कहा कि वैश्विक स्थिति गंभीर है, क्योंकि यूक्रेन-रूस और इजरायल-हमास के बीच युद्ध और लाल सागर संकट अभी भी जारी है। मंत्री ने कहा कि यूरोप जैसे कुछ प्रमुख लोकतांत्रिक देशों में चुनाव भी हो रहे हैं। गोयल ने यहां संवाददाताओं से कहा, ''ऐसी स्थिति में यह सकारात्मक संकेत है कि हमारा निर्यात बढ़ रहा है (मई में 9% की वृद्धि) और इससे यह पता भी चलता है कि दुनिया भारत के साथ व्यापार और निवेश करना चाहती है। हमें भरोसा है कि इस साल हमारा निर्यात 800 अरब डॉलर से अधिक होगा और यह एक ऐतिहासिक रिकॉर्ड होगा।''वह रत्न एवं आभूषण निर्यातकों के एक कार्यक्रम में भाग लेने के लिए यहां आए थे। 800 अरब डॉलर के निर्यात के लिए मंत्रालय विदेश स्थित भारतीय मिशनों और निर्यात संवर्धन परिषदों के साथ मिलकर काम कर रहा है। पिछले वर्ष चालू खाता घाटा (सीएडी) भी कम हुआ है। ऐसे में निर्यात बढ़ेगा, विनिर्माण को बढ़ावा मिलेगा। भारत ने मार्च तिमाही में 5.7 अरब डॉलर या जीडीपी के 0.6 प्रतिशत के बराबर चालू खाता अधिशेष दर्ज किया।

सीबीआई ने मुंबई में दो पासपोर्ट सेवा केंद्रों में भ्रष्टाचार को लेकर छापेमारी की

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) ने बड़े पैमाने भ्रष्टाचार के आरोप में मुंबई में दो पासपोर्ट सेवा केंद्र (पीएसके) के 14 अधिकारियों के खिलाफ प्राथमिकियां दर्ज करने के बाद शनिवार को महाराष्ट्र में 33 स्थानों पर तलाशी अभियान चलाया। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि सीबीआई ने लोअर परेल और मलाड में केंद्रों के अधिकारियों और बिचौलियों से जुड़े एक भ्रष्टाचार रैकेट का पर्दाफाश किया है। सीबीआई ने अपनी 12 प्राथमिकियों में 18 एजेंट और बिचौलियों के खिलाफ भी मामला दर्ज किया है।

सीबीआई के एक अधिकारी ने बताया, ''ये अधिकारी पासपोर्ट सेवा एजेंट के साथ नियमित संपर्क में थे और अपर्याप्त या अधूरे दस्तावेजों के आधार पर या पासपोर्ट आवेदकों के व्यक्तिगत विवरण में हेरफेर करके पासपोर्ट जारी करने के बदले में अनुचित लाभ प्राप्त करने के लिए उनके साथ साजिश रचते थे।'' अधिकारियों ने बताया कि 26 जून को विदेश मंत्रालय के सतर्कता विभाग के साथ पीएसके में संयुक्त औचक निरीक्षण के दौरान कथित भ्रष्टाचार का पता चला। मोबाइल फोन, सोशल मीडिया चैट और यूपीआई भुगतान के विश्लेषण से कई लाख रुपये के कुछ संदिग्ध लेनदेन सामने आए। एजेंसी के अधिकारियों ने बताया आरोपी पीएसके अधिकारी जूनियर और सीनियर पासपोर्ट सहायकों के पद पर हैं और कथित तौर पर विभिन्न पासपोर्ट सेवा एजेंट और बिचौलियों के साथ मिलीभगत करके काम कर रहे थे व अपने या परिवार के सदस्यों के बैंक खातों में अवैध रूप से धन प्राप्त कर रहे थे।

तमिलनाडु ने अवैध शराब पर रोक के लिए सजा एवं जुर्माना बढ़ाते हुए कानून में संशोधन किया

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

चेन्नई। सत्तारूढ़ द्रविड़ मुनेत्र कषगम (द्रमुक) ने अवैध शराब के विनिर्माण, इसके भंडारण और बिक्री जैसे अपराधों को लेकर सजा तथा जुर्माने में वृद्धि के लिए तमिलनाडु मद्यनिषेध अधिनियम 1937 में शनिवार को संशोधन किया। तमिलनाडु मद्यनिषेध (संशोधन) अधिनियम सरकार द्वारा अधिसूचना जारी किए जाने के बाद प्रभाव में आएगा और इसका लक्ष्य राज्य से अवैध शराब की बुराई को पूरी तरह दूर करना है।

कल्लाकुरिचि अवैध शराब त्रासदी के बाद इस कानून में यह संशोधन किया गया है तथा अधिनियम की धाराओं- चार, पांच, छह, सात और 11 के तहत विभिन्न अपराधों में कैद की सजा और जुर्माने की राशि बढ़ा दी गई है।

इस संशोधन में अधिकतम 10 साल के सश्रम कारावास तथा पांच लाख रुपये तक के जुर्माने का प्रावधान है।

संशोधन के अनुसार, अवैध शराब पीने पर किसी की मौत होने की स्थिति में शराब तस्करों को कठोर उम्रकैद होगी तथा उन पर 10 लाख रुपये तक का जुर्माना लगेगा।

कांग्रेस विधायक दल के नेता के. सेल्वापेरुनथगाई ने इस विधेयक का समर्थन करते हुए व्यवस्था में जांच एवं संतुलन खासकर पुलिस को सभी शक्तियां देने के बजाय प्रवर समिति गठित करने का सुझाव दिया।

पट्टाली मक्कल काची (पीएमके) के नेता जी के मणि ने सरकार से शराबकांड के लिए पुलिस या खास अधिकारी को जिम्मेवार ठहराने तथा राज्य में पूर्ण मद्यनिषेध को लागू करने के वास्ते कदम उठाने की मांग की। मद्यनिषेध मंत्री एम मुथुस्वामी ने यह विधेयक विधानसभा में पेश किया जिसे सदन ने बाद में पारित कर दिया।

स्टालिन ने मोदी को पत्र लिखकर तमिलनाडु को नीट परीक्ष से छूट देने की पुनः मांग की

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

चेन्नई। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम के स्टालिन ने शुक्रवार को एक बार फिर केंद्र सरकार से राज्य को मेडिकल कॉलेजों में प्रवेश के लिए राष्ट्रीय पात्रता-सह-प्रवेश परीक्षा (नीट-यूजी) से छूट देने और राष्ट्रीय स्तर पर इस प्रणाली को समाप्त करने का आग्रह किया है।

तमिलनाडु को नीट से छूट देने के संबंध में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को संबोधित एक पत्र में मुख्यमंत्री ने कहा कि व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के लिए चयन प्रक्रिया केवल 12वीं कक्षा के अंकों के आधार पर होनी चाहिए न कि इसके लिए अलग से प्रवेश परीक्षा कराई जानी चाहिए क्योंकि इससे छात्रों पर अधिक तनाव पड़ता है।

स्टालिन ने अपने पत्र में कहा, ''हमने तमिलनाडु में नीट परीक्षा न कराने और 12वीं कक्षा के अंकों के आधार पर मेडिकल कॉलेजों में प्रवेश प्रदान करने के लिए अपनी विधानसभा में सर्वसम्मति से एक विधेयक पारित किया था। इसे राष्ट्रपति की मंजूरी के लिए भेजा गया है, लेकिन अभी तक मंजूरी नहीं दी गई है।''

उन्होंने कहा कि तमिलनाडु विधानसभा ने उपरोक्त बताई गई मांग के संबंध में आज विधानसभा में सर्वसम्मति से एक प्रस्ताव पारित किया है, जिसमें केंद्र सरकार से आग्रह किया गया कि वह तमिलनाडु को नीट से छूट देने के लिए विधेयक पर अपनी सहमति जताए और राष्ट्रीय स्तर पर इस चयन प्रक्रिया को खत्म करने के लिए राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग अधिनियम में संशोधन करे।

इस बीच, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, झारखंड, कर्नाटक, केरल, पंजाब, तेलंगाना और पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री को लिखे अलग-अलग पत्रों में स्टालिन ने उनसे अनुरोध किया कि वे अपनी-अपनी विधानसभाओं में नीट परीक्षा को समाप्त करने के लिए इसी तरह का प्रस्ताव पारित करने पर विचार करें।

उन्होंने लोकसभा के विपक्ष के नेता राहुल गांधी को भी पत्र लिखकर तमिलनाडु को नीट परीक्षा से छूट देने की मांग पर उनका समर्थन मांगा है।

स्टालिन ने राहुल गांधी को लिखे पत्र में कहा, ''राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी (एनटीए) द्वारा आयोजित नीट-यूजी की परीक्षा में अनियमितताओं की हालिया घटनाओं ने देश में मेडिकल कोर्स करने के इच्छुक कई मेहनती उम्मीदवारों के सपनों को चकनाचूर कर दिया है। यह व्यवस्था ग्रामीण क्षेत्र के गरीब युवाओं को मेडिकल में स्नातक करने के सपने पूरे करने से भी वंचित कर रही है।''

उन्होंने कहा, ''मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि आप इस मुद्दे और तमिलनाडु की मांग को संसद में उठाएं तथा विपक्षी गठबंधन 'इंडिया' में शामिल राज्यों को भी सुझाव दें कि वे देश के युवाओं के हित में संबंधित विधानसभाओं में इसी तरह के प्रस्ताव पारित करें।''

तमिलनाडु में पटाखा निर्माण इकाई में विस्फोट से चार श्रमिकों की मौत, मुख्यमंत्री ने की मुआवजा घोषणा

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

विरुधुनगर(तमिलनाडु)। यहां एक पटाखा निर्माण इकाई में विस्फोट होने से चार श्रमिकों की मौत हो गई और एक अन्य व्यक्ति घायल हो गया। पुलिस ने शनिवार यह जानकारी दी। जिला पुलिस के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि श्रमिकों की मौके पर ही मौत हो गई। उन्होंने कहा कि विस्फोट तथा आग लगने का कारण पटाखा बनाने में रासायनिक पदार्थों का गलत तरीके से इस्तेमाल किया जाना बताया जा रहा है। उन्होंने बताया कि इकाई के नजदीक मौजूद एक अन्य व्यक्ति घायल हो गया और इमारतों और अन्य कमरों को नुकसान पहुंचा है।

मुख्यमंत्री एम.के. स्टालिन ने दुख जताते हुए चारों मृत श्रमिकों के परिवार को मुआवजे के रूप में तीन-तीन लाख रुपये देने की घोषणा की। विस्फोट 29 जून की सुबह विरुधुनगर जिले के सत्तूर तालुक के पंथुवरपट्टी गांव स्थित एक आतिशबाजी इकाई में हुआ था। मृतकों की पहचान अचनकुलम गांव के राजकुमार(45), नाडुसुरनकुडी के मारिसमी (40) और वेम्बकोट्टई के सेल्वाकुमार (35) और मोहन (30) के रूप में हुई।

ईडी ने धनशोधन मामले में माकपा के भूखंड और बैंक जमाराशि को कुर्क किया

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/कोच्चि। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने शनिवार को आरोप लगाया कि केरल में मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (माकपा) के पास धनशोधन की आय है। एजेंसी ने करुवन्नूर सेवा सहकारी बैंक घोटाला' से जुड़ी मौजूदा धनशोधन जांच के तहत राज्य में माकपा के एक कथित भूखंड और 73 लाख रुपये की बैंक जमाराशि को कुर्क किया है। धनशोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए) के तहत एक आदेश जारी होने के बाद संघीय एजेंसी ने मामले से जुड़े विभिन्न व्यक्तियों और संस्थानों की 28.65 करोड़ रुपये की संपत्ति भी कुर्क की है।

आधिकारिक सूत्रों ने बताया कि इस मामले में दाखिल किए जाने वाले अगले पूरक आरोप-पत्र में पार्टी को आरोपी के तौर पर नामित किया जा सकता है। अगर ऐसा होता है तो यह आम आदमी पार्टी के बाद धनशोधन जांच में आरोपी के तौर पर नामित होने वाली दूसरी राजनीतिक पार्टी होगी। हाल ही में ईडी ने दिल्ली आबकारी नीति मामले में आप' को बतौर आरोपी नामित किया है। माकपा ने गड़बड़ी और धनशोधन के आरोपों से इनकार किया है। ईडी ने एक बयान में कहा कि कुर्क की गई संपत्तियों में 18 अचल संपत्तियां शामिल हैं, जिसमें घोटाले' के लाभार्थियों की केरल में भूमि और भवन शामिल हैं, जिनकी कीमत 28.65 करोड़ रुपये है। बयान में कहा गया है कि कुर्क की गई संपत्तियों में माकपा के एक जिला सचिव के नाम पर पार्टी कार्यालय के लिए पंजीकृत 10 लाख रुपये की अचल संपत्ति भी शामिल है।

इसमें कहा गया कि कुर्क की गयी संपत्तियों में केरल के त्रिशूर जिले में राजनीतिक दल के 'अघोषित' बैंक खातों में रखी 63.62 लाख रुपये की जमाराशि शामिल हैं। एजेंसी ने दावा किया कि माकपा ने लाभार्थियों से शासी निकाय के माध्यम से दान के रूप में ये धनराशि प्राप्त की और पार्टी के पास ये अपराध से ''अर्जित आय'' है, जिसे अचल संपत्तियों की खरीद में निवेश किया गया है और करुवन्नूर सेवा सहकारी बैंक लिमिटेड के पांच बैंक खातों में जमा किया गया है। माकपा ने ईडी के आरोपों का खंडन किया है और कहा है कि वह करोड़ों रुपये के कथित करुवन्नूर बैंक घोटाले से संबंधित मामले में उसे आरोपी बनाने की जांच एजेंसी के किसी भी कदम का कानूनी और राजनीतिक रूप से डटकर मुकाबला करेगी।

पार्टी के प्रदेश सचिव एम वी गोविंदन ने आरोप लगाया कि ईडी राजनीतिक कारणों से विभिन्न मामलों में विपक्षी दलों एवं उनके नेताओं को आरोपी बनाने का प्रयास कर रही है। ईडी का मानना है कि उसने जो भूखंड कुर्क किया है वह माकपा के पार्टी कार्यालय के लिए था और उसे ऋणधारकों या करुवन्नूर सेवा सहकारी बैंक द्वारा मंजूर किये गये ऋण के लाभार्थियों से मिली कथित रिश्वत से खरीदा गया था। एजेंसी ने इस मामले में कम से कम दो आरोपियों के 'इकबालिया' बयानों पर भरोसा किया है। इन आरोपियों ने न्यायिक मजिस्ट्रेट के सामने अपने बयान में दावा किया कि बैंक में कथित अनियमितताएं माकपा की त्रिशूर जिला समिति के नेताओं के इशारे पर हुईं। गोविंदन ने कहा कि पार्टी इकाइयों के कार्यालय और अन्य संपत्तियों को संबंधित जिला समितियों के नाम पर पंजीकृत करने की यह दशकों पुरानी प्रथा रही है।

उन्होंने पूछा कि किसी स्थानीय समिति द्वारा निर्मित कार्यालय में पार्टी की क्या भूमिका है? गोविंदन ने दावा किया कि ईडी अब ऐसी ही एक पार्टी इकाई की संपत्ति के नाम पर माकपा की छवि खराब करने की कोशिश कर रही है।

केरल में टैंकर से गैस रिसाव के बाद आठ विद्यार्थियों को अस्पताल में भर्ती कराया गया

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

कन्नूर। केरल में कन्नूर जिले के रामपुरम में एक टैंकर लॉरी से गैस रिसाव के बाद शनिवार को एक नर्सिंग कॉलेज के कम से कम आठ विद्यार्थियों को अस्पताल में भर्ती कराया गया।

पुलिस ने बताया कि कॉलेज के विद्यार्थियों को बेचैनी और सांस लेने में कठिनाई होने लगी और उन्हें परियारम मेडिकल कॉलेज और पझायंगडी तालुक अस्पताल ले जाया गया। पुलिस ने बताया कि उनकी हालत स्थिर है। अधिकारियों ने बताया कि पय्यान्नूर और परियायम पुलिस की एक दमकल टीम मौके पर पहुंची और कार्रवाई शुरू की, लेकिन रिसाव को पूरी तरह से रोका नहीं जा सका।

उन्होंने बताया कि कंटेनर के पीछे वाले वाल्व में रिसाव का पता चला और अग्निशमन दल द्वारा वाहन को शीघ्र ही सुरक्षित स्थान पर ले जाया गया। तालीपरम्बा राजस्व प्रभागीय अधिकारी (आरडीओ) अजयकुमार ने कहा कि गैस को दूसरे टैंकर में भरने के लिए कदम उठाए जा रहे हैं।

पुडुचेरी सरकार नए आपराधिक कानून लागू करने के लिए तैयार

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

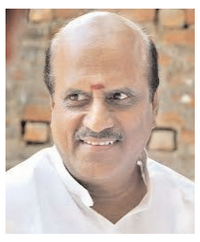

पुडुचेरी। पुडुचेरी सरकार ने शनिवार को कहा कि एक जुलाई से प्रभावी होने वाले नए आपराधिक कानूनों को लागू करने के लिए सभी आवश्यक कदम उठा लिए गए हैं।

लोक निर्माण एवं विधि मंत्री के. लक्ष्मीनारायणन ने पीटीआई-भाषा को बताया कि नए कानूनों-भारतीय न्याय संहिता, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता और भारतीय साक्ष्य अधिनियम के क्रियान्वयन से संबंधित सभी लोगों को पहले ही प्रशिक्षण दिया जा चुका है।

उन्होंने कहा कि पुलिस और अधिवक्ताओं की सुविधा के लिए पहले ही एक नियमावली प्रकाशित की जा चुकी है जिसमें नए कानूनों की विशेषताओं पर प्रकाश डाला गया है। लक्ष्मीनारायणन ने कहा, ये केंद्रीय अधिनियम हैं और इनमें हमारी कोई भूमिका नहीं है तथा हम इन अधिनियमों को एक जुलाई से लागू करेंगे। नए कानूनों की विशेषताओं पर ध्यान केंद्रित करने के लिए सोमवार को एक बैठक आयोजित की जाएगी, जिसमें उपराज्यपाल, पुडुचेरी के मुख्यमंत्री, कानून मंत्री और उच्च पदस्थ पुलिस अधिकारी हिस्सा लेंगे। उन्होंने कोई समयसीमा बताए बिना कहा कि कानूनों का तमिल में अनुवाद किए जाने की संभावना है।

कोझिकोड में 12 वर्षीय लड़का मस्तिष्क खाने वाले अमीबा से संक्रमित, केरल में तीसरा मामला

कोझिकोड। केरल के कोझिकोड जिले में12 वर्षीय एक लड़का दूषित जल में पाए जाने वाले अमीबा से होने वाले दुर्लभ मस्तिष्क संक्रमण से पीड़ित है। एक निजी अस्पताल से जुड़े सूत्रों ने यह जानकारी दी। केरल में मई के बाद से घातक संक्रमण का यह तीसरा मामला है। कोझिकोड के 12 वर्षीय लड़के को सोमवार को यहां बेबी मेमोरियल अस्पताल में भर्ती कराया गया। उसका इलाज कर रहे चिकित्सकों में से एक ने कहा कि संक्रमण की पहचान कर ली गई थी और उसी दिन इलाज शुरू हो गया था। चिकित्सक ने कहा, ''इस बीमारी से मृत्यु दर 95-100 प्रतिशत है। लड़के की हालत गंभीर है।'' यह अमीबा दूषित जल में पाया जाता है और दूषित जल में नहाने या गोताखोरी करने से इसके संपर्क में आने का खतरा होता है।

स्कूल शिक्षक बैंक तैयार करेगा केरल

तिरुवनंतपुरम। केरल जल्द ही स्कूलों से सेवानिवृत्त शिक्षकों का एक शिक्षक बैंक तैयार करेगा, जिसका उद्देश्य उनके ज्ञान और विशेषज्ञता का दोहन करना है। राज्य के सामान्य शिक्षा मंत्री वी शिवनकुट्टी ने शनिवार को यहां कहा कि सामान्य शिक्षा विभाग इसी साल इसके लिए प्रक्रियाएं शुरू करेगा। उन्होंने कहा, सेवानिवृत्त स्कूल शिक्षकों का एक शिक्षक बैंक तैयार किया जाएगा और इसकी प्रक्रियाएं इसी साल शुरू की जाएंगी। सामान्य शिक्षा विभाग का रुख सेवानिवृत्त लोगों के ज्ञान व विशेषज्ञता का उपयोग करना है। शिवनकुट्टी ने कहा कि सेवा में रुचि रखने वाले सभी सेवानिवृत्त शिक्षक प्रस्तावित शिक्षक बैंक का हिस्सा हो सकते हैं। मंत्री यहां सेवानिवृत्त स्कूल शिक्षकों की एक बैठक का उद्घाटन करने के बाद बोल रहे थे।

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया Union Bank of India

क्षेत्रीय कार्यालय, द्वितीय तल, 139, ब्रॉडवे, चेन्नई-600108

पट्टे पर परिसर की आवश्यकता

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया को बैंकिंग प्रयोजन हेतु **टीएसके नगर (49750)** में भूतल पर **2000-2200 वर्ग** फीट कालीन क्षेत्र के लिए तैयार स्थिति में एक उपयुक्त परिसर की आवश्यकता है, जो अधिमानत: हमारे वर्तमान **यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, टीएसके नगर, आर-32, टीएनहेचबी शापिंग कॉम्प्लेक्स, अंबत्तूर एस्टेट रोड, टीएस कृष्णा नगर, चेन्नै-600050** से 500 मीटर्स के अंदर

भावी विक्रेता जो स्वामित्व रखते हैं या परिसर के मालिक की ओर से बातचीत करने का अधिकार रखते हैं, वे कार्यालय समय के दौरान **01.07.2024** से यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, टीएसके नगर शाखा/क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै उत्तर से तकनीकी बोली एवं मूल्य बोली के फार्मेट प्राप्त करें या वेबसाइट **www.unionbankofindia.co.in or https://eprocure.gov.in** से डाउनलोड करें और अपनी तकनीकी बोलीयों तथा मूल्य बोलीयों को, दो अलग-अलग मुहरबंद लिफाफे में डालकर, उसके ऊपर तकनीकी/मूल्य बोली लिखकर यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै उत्तर(ब्रॉडवे क्षेत्रीय कार्यालय), सं.139, प्रकाशम सालै, ब्रॉडवे, द्वितीय तल, चेन्नै-600 108 को दिनांक **22.07.2024 (सोमवार)** के दोपहर **3.00 बजे** तक या उससे पहले प्रस्तुत करें। विक्रेता/उनके प्रतिनिधियों की उपस्थिति में, उपरोक्त पते पर, **22.07.2024 (सोमवार)** को शाम **4.00 बजे** तकनीकी बोलियाँ खोली जाएगीं। कृपया दलाल या मध्यवर्ती संस्थाएं भाग न लें। सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों या सरकारी/अर्ध सरकारी निकायों द्वारा पट्टे पर दी जानेवाली संपत्ति को प्राथमिकता दी जाएगी। बिना कोई कारण बताए, बोलियों को स्वीकार या अस्वीकार करने का अधिकार बैंक रखता है।

उप महा प्रबन्धक

नये आपराधिक कानूनों का तमिल में अनुवाद जारी, जल्द पूरा होने की संभावना

चेन्नई। नये आपराधिक कानूनों का तमिल में अनुवाद जारी है और इसके जल्द पूरा होने की संभावना है। आधिकारिक सूत्रों ने यह जानकारी दी। सूत्रों ने बताया कि एक जुलाई 2024 से नये आपराधिक कानूनों को लागू करने के लिए पुलिसकर्मियों को आवश्यक प्रशिक्षण दिया गया है। साथ ही, यह सुनिश्चित करने के लिए सभी प्रयास किए गए हैं कि पुलिसकर्मियों को विभिन्न अपराधों के लिए उपयुक्त धाराएं लगाने में कोई कठिनाई न हो। आधिकारिक सूत्रों ने पीटीआई-भाषा को बताया कि तीनों नये आपराधिक कानूनों का अनुवाद कार्य जारी है और जल्द ही इसके पूरा होने की संभावना है। इसके पूरा होने के बाद तमिल संस्करण को अंग्रेजी में कानूनों के प्रामाणिक अनुवाद के रूप में अनुमोदन और प्रमाणन के लिए केंद्र सरकार को भेजा जाएगा।

तीनों नये आपराधिक कानून - भारतीय न्याय संहिता, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता और भारतीय साक्ष्य अधिनियम क्रमशः भारतीय दंड संहिता 1860, दंड प्रक्रिया संहिता अधिनियम 1898 और भारतीय साक्ष्य अधिनियम 1872 की जगह लेंगे।

मुख्यमंत्री एम के स्टालिन ने शुक्रवार को कहा था कि एक जुलाई 2024 से राज्य में नये आपराधिक कानूनों को उपयुक्त रूप से लागू करने के लिए न्यायिक कर्मियों और पुलिसकर्मियों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

कुलपतियों के चयन के लिए खोज समितियां: केरल के राज्यपाल ने कहा कि विश्वविद्यालय प्रशासन ने चूक की

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

तिरुवनंतपुरम। केरल में छह विश्वविद्यालयों के कुलपतियों के चयन के लिए खोज समितियों के गठन के एक दिन बाद राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान ने शनिवार को कहा कि वह अपना कर्तव्य निभा रहे हैं, लेकिन उनके कार्यालय द्वारा बार-बार स्मरण दिलाए जाने के बावजूद विश्वविद्यालय प्रशासन की ओर से जानबूझकर चूक की गई।

राज्य के विश्वविद्यालयों के कुलाधिपति के रूप में खान ने शुक्रवार को केरल विश्वविद्यालय, महात्मा गांधी विश्वविद्यालय, केरल यूनिवर्सिटी ऑफ फिशरीज एंड ओशन स्टडीज, एपीजे अब्दुल कलाम टेक्नोलॉजिकल यूनिवर्सिटी, केरल एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी एंड मलयालम यूनिवर्सिटी के कुलपतियों के चयन के लिए अधिसूचना जारी की।

खान ने यहां पत्रकारों के साथ बातचीत में मीडिया में आई खबरों का हवाला दिया और दावा किया कि राज्य सरकार ने विश्वविद्यालयों को निर्देश दिया है कि वे खोज समितियों के लिए अपने प्रतिनिधि न भेजें।

राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान ने कहा, मेरा कर्तव्य यह सुनिश्चित करना है कि विश्वविद्यालयों में नियमित कुलपति हों। मैं विश्वविद्यालयों को पत्र भेज रहा हूं। मैंने केरल यूनिवर्सिटी को छह स्मरण पत्र भेजे हैं।

उन्होंने कहा कि इस उद्देश्य के लिए बुलाई गई पिछली बैठक में शिक्षा मंत्री वहां पहुंचीं और उन्होंने बैठक में व्यवधान डाला।

मंत्री दिलावर के 'डीएनए टेस्ट' वाले बयान के विरोध में खून का नमूना लेकर पहुंचे सांसद रोत

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

जयपुर। राजस्थान के शिक्षा मंत्री मदन दिलावर के आदिवासियों के डीएनए की जांच संबंधी बयान के विरोध में बांसवाड़ा के नवनिर्वाचित सांसद राजकुमार रोत शनिवार को अपने समर्थकों के साथ जयपुर पहुंचे और पुलिस को अपने खून का नमूना सौंपा। भारत आदिवासी पार्टी (बीएपी) के सांसद रोत अपने समर्थकों के साथ अपने 'खून का नमूना' लेकर मंत्री दिलावर के आवास की ओर विरोध प्रदर्शन करने के लिए जाना चाहते थे लेकिन पुलिस ने उन्हें रोक दिया।

इसके बाद रोत अपने समर्थकों के साथ यहां अमर जवान ज्योति पहुंचे। इस दौरान गंगापुर से कांग्रेस विधायक रामकेश मीणा समेत कई नेता मौजूद थे, जिन्होंने दिलावर के खिलाफ नारेबाजी की। पुलिस ने खून के नमूने एकत्र किये, जिसके बाद प्रदर्शनकारी शांत हुए और वापस लौट गए।

रोत ने संवाददाताओं से कहा, यह मामला यहां दबने वाला नहीं है। यह मामला विधानसभा में उठाया जाएगा। मैं संसद में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के सामने भी यह मुद्दा उठाऊंगा। अगर यहां खून का नमूना नहीं लिया गया, तो डीएनए टेस्ट के लिए खून का नमूना संसद में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को दिया जाएगा। दिलावर और बांसवाड़ा के नवनिर्वाचित सांसद रोत के बीच 22 जून को जुबानी जंग छिड़ गई थी। मंत्री ने कथित तौर पर आदिवासी नेता के हिंदू होने या न होने की पुष्टि के लिए डीएनए टेस्ट कराने का सुझाव दिया था।

हाल में रोत ने कहा था कि वह आदिवासी समुदाय से हैं और हिंदू धर्म सहित संगठित धर्मों से अलग आस्था पद्धति को मानते हैं। इस पर दिलावर ने कहा था,बीएपी के नेता खुद को हिंदू नहीं मानते हैं तो उनके डीएनए की जांच करा लेंगे।

मुख्यमंत्री किसान सम्मान निधि योजना का शुभारम्भ

जयपुर। सहकारिता मंत्री गोतम कुमार दक ने शनिवार को बताया कि प्रदेश के मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा राजस्थान के किसानों के लिये मुख्यमंत्री किसान सम्मान निधि योजना का शुभारम्भ करेंगे। टोंक के कृषि उपज मण्डी प्रांगण में 30 जून को राज्य स्तरीय समारोह का आयोजन किया जा रहा है जिसमें प्रदेश के 65 लाख से अधिक किसानों को योजना के तहत प्रथम किश्त के रूप में 650 करोड़ रुपये से अधिक की राशि का सीधा उनके बैंक खातों में हस्तान्तरण किया जायेगा।

उन्होंने बताया कि मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा ने प्रदेश की विषम भौगोलिक परिस्थितियों एवं किसानों की कृषि संबंधी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुये किसानों को प्रतिवर्ष 2000 रुपये की अतिरिक्त राशि देने का ऐतिहासिक निर्णय लिया है।

विकसित एवं उत्कृष्ट राजस्थान बनाने में युवा शक्ति की अहम भूमिका होगी : भजनलाल

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि विकसित एवं उत्कृष्ट राजस्थान बनाने में युवा शक्ति की अहम भूमिका होगी। राजकीय सेवाओं में युवाओं को प्रदेश व समाज के जरूरतमंद वर्ग की सेवा करने एवं सकारात्मक परिवर्तन लाने का अवसर प्राप्त होता है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार प्रदेश के युवाओं की उम्मीदों पर खरा उतर रही है और उन्हें सरकारी नौकरियों के सुनहरे अवसर भी प्रदान कर रही है। शर्मा शनिवार को जयपुर के मानसरोवर स्थित टैगोर इंटरनेशनल स्कूल ऑडिटोरियम में प्रथम बार आयोजित हो रहे राज्य स्तरीय 'मुख्यमंत्री रोजगार उत्सव' समारोह को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने नवनियुक्त राज्य कार्मिकों को नियुक्ति पत्र प्रदान कर उत्कृष्ट राज्यकार्य के लिए प्रेरित किया। साथ ही, सभी जिला मुख्यालयों से जुड़े नवनियुक्त कार्मिकों से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से संवाद भी किया। कार्यक्रम में प्रदेश के सभी जिलों से 20 हजार से अधिक नवनियुक्त अधिकारी-कर्मचारी शामिल हुए।

मुख्यमंत्री ने कहा कि युवा को जब नौकरी मिलती है तो पूरे परिवार को आत्मबल की अनुभूति होती है। यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से प्रेरणा लेते हुए प्रदेश में नियमित रूप से 'मुख्यमंत्री रोजगार उत्सव' आयोजित किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार युवाओं को रोजगार देने के संकल्प पत्र के वादे को पूरा करने के लिए पारदर्शी एवं समयबद्ध भर्ती परीक्षाओं का आयोजन सुनिश्चित कर रही है। शर्मा ने कहा कि प्रदेश में रोजगार के अवसर उपलब्ध करवाने के साथ ही खेल प्रतिभाओं को भी आगे बढ़ाया जा रहा है। इसके लिए संभाग स्तर पर खेल सुविधाएं विकसित हो रही हैं ताकि मिशन ओलंपिक के लिए युवाओं को प्रतिस्पर्धी माहौल और उच्च स्तरीय प्रशिक्षण एवं संसाधन उपलब्ध हो सकें।

शर्मा ने कहा कि युवाओं को रोजगार के बेहतर अवसर प्रदान करने के लिए विभागों में रिक्त पदों एवं सेवानिवृत्ति के बाद रिक्त पदों की कलेण्डर बनाकर भर्तियां आयोजित की जाएंगी। इस वर्ष विभिन्न राजकीय सेवाओं के 70 हजार पदों पर भर्तियां की जा रही हैं। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार द्वारा अब तक 16 हजार 641 पदों पर नियुक्ति, 58 हजार पदों के लिए विज्ञापन जारी, 11 हजार 500 पदों के लिए परीक्षा आयोजित एवं 5 हजार 500 पदों की वित्तीय स्वीकृति प्रदान की गई है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार प्रदेश में युवाओं के लिए बेहतर रोजगार के अवसर उपलब्ध करवाने के लिए कृतसंकल्पित है। इस दिशा में प्रदेश में जेम्स एवं ज्वेलरी पार्क, भीलवाड़ा में टेक्सटाइल पार्क, इंडस्ट्रियल कॉरिडोर तथा हैंडीक्राफ्ट पार्क स्थापित किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि पर्यटन, निर्माण, सेवा, एमएसएमई, कृषि, गैर-परंपरागत ऊर्जा में निवेश एवं ढांचागत सुधारों के जरिये प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से रोजगार के अवसर प्रदान किए जाएंगे। साथ ही, स्किल डवलपमेंट के माध्यम से युवाओं में कौशल संवर्द्धन किया जाएगा।

शर्मा ने कहा कि भर्ती प्रक्रिया में फर्जीवाड़ा करने वाले सावधान रहें, क्योंकि प्रदेश में सरकार बदल गई है और युवाओं के हितों पर कुठाराघात करने वालों को बख्शा नहीं जाएगा। उन्होंने कहा कि हमने सरकार का गठन होते ही पेपरलीक मामलों की त्वरित जांच के लिए एसआईटी का गठन किया और दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जा रही है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश में स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर बनाने के लिए आईटी आधारित नवाचार को अपनाया जाएगा। रोग एवं उपचार की समस्त जानकारी एक ही प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध हो सकेगी, जिससे रोगी और चिकित्सक को पेशेंट हिस्ट्री सुलभता से उपलब्ध होगी।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री शर्मा ने राजकीय सेवाओं में नवनियुक्त कार्मिकों से संवाद भी किया। प्रशिक्षु आरएएस अधिकारी आकांक्षा दुबे ने मुख्यमंत्री का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि प्रशासन का हिस्सा बनकर गौरवान्वित महसूस हो रहा है। राजस्थान राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड में कनिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी के पद पर नवनियुक्त कार्मिक ललित कुमार, हरीश परिहार ने कहा कि राज्य सरकार ने 6 माह में भर्ती प्रक्रिया पूरी कर नियुक्ति प्रदान की है, जिसके लिए वह मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा का आभार व्यक्त करते हैं। नीमकाथाना जिले से वरिष्ठ उपाध्याय (प्राध्यापक) उदय शर्मा ने शीघ्र नियुक्ति देने पर मुख्यमंत्री का आभार जताया। उन्होंने कहा कि रीट पेपर लीक का दंश वह झेल चुके हैं इसलिए सरकार द्वारा पेपर लीक के दोषियों के खिलाफ की जा रही कार्रवाई सराहनीय है। जोधपुर से शिक्षा विभाग में व्याख्याता ओमाराम ने कहा कि वह किसान परिवार से आते हैं। उनका सरकारी नौकरी लगने का सपना पूरा हुआ है। इस नौकरी के जरिए वह शिक्षा का उजियारा फैलाएंगे।

आजाद और जीवंत प्रेस ही लोकतंत्र की सबसे बड़ी ताकत : राज्यपाल

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

जयपुर । राज्यपाल एवं कुलाधिपति कलराज मिश्र ने कहा है कि आजाद और जीवंत प्रेस ही लोकतंत्र की सबसे बड़ी ताकत है। उन्होंने कहा कि कृत्रिम बुद्धिमता के इस दौर में भाषा विशेषज्ञों, शब्द संवेदना से जुड़े मर्मज्ञ विद्वानों की सहायता से पत्रकारिता के स्वस्थ मूल्यों के लिए विश्वविद्यालय नींव रूप में कार्य करे।

मिश्र शनिवार को हरिदेव जोशी पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय के द्वितीय दीक्षांत समारोह में संबोधित कर रहे थे। उन्होंने विश्वविद्यालय के नवनिर्मित मुख्य भवन का ऑनलाइन लोकार्पण भी किया और इसके लिए बधाई दी। उन्होंने कहा कि पत्रकारिता शिक्षा के अंतर्गत नई शिक्षा नीति के आलोक मे ऐसे पाठ्यक्रम तैयार किए जाएं जो युग की चुनौतियों को स्वीकार करते हुए नई पीढ़ी को संवेदनशील, सजग और भविष्य के बेहतर नागरिक बना सके। उन्होंने विकसित भारत की संकल्पना को साकार करने के लिए पत्रकारिता शिक्षा से जुड़े विद्यार्थियों की सहभागिता का भी आह्वान किया।

राज्यपाल ने कहा कि पत्रकारिता का यह दौर चुनौतीपूर्ण है। मीडिया में इस बात की होड़ मच रही है कि पलपल की खबरों को कैसे सबसे पहले प्रकाशितप्रसारित किया जाए। ऐसे में इस बात का ध्यान रखा जाए कि मानव मूल्य कहीं तिरोहित नहीं हो। उन्होंने पत्रकारिता शिक्षा के अंतर्गत मानवीय मूल्यों की शिक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए भविष्य के पत्रकार, जनसंचार कर्मी तैयार किए जाने की आवश्यकता जताई। उन्होंने डीप फेक, तथ्यहीन और मर्यादाहीन समाचार प्रस्तुति आदि की चर्चा करते हुए कहा कि भ्रामक समाचारों से कैसे बचा जाए, इस पर भी कार्य होना चाहिए।

मिश्र ने कहा कि मीडिया का एक बड़ा कार्य आम जन को राज्य के कल्याणकारी कार्यों, विकास योजनाओं और उपलब्धियों के प्रति सजग करना भी है। जनसंचार शिक्षा की इसमें महती भूमिका है। उन्होंने कहा कि सरकार की कल्याणकारी योजनाएं और विकास कार्यक्रम प्रभावी रूप में आम जन तक कैसे पहुंचे, जनसंचार माध्यमों की सकारात्मक भूमिका इसमें कैसे बनी रहे, इसके शिक्षण पर भी विश्वविद्यालय प्रभावी रूप में कार्य करें। राज्यपाल ने इस अवसर पर विभिन्न अनुशासनो में 94 विद्यार्थियों को उपाधियां प्रदान की। उन्होंने 6 छात्र-छात्राओं को स्वर्ण पदक प्रदान किए। इनमें 5 पदक छात्राओं को मिलने पर उन्होंने प्रसन्नता जताते हुए कहा कि यह इस बात का प्रतीक है कि भारत का भविष्य उज्ज्वल है। उन्होंने कहा कि जिस समाज में बालिकाएं आगे बढ़ती है, वही समाज तेजी से आगे बढ़ता है। राज्यपाल मिश्र ने इससे पहले संविधान की उद्देशिका और मूल कर्तव्यों का वाचन करवाया। विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. सुधि राजीव ने विश्वविद्यालय का प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। इस मौके पर विश्वविद्यालय के नव निर्मित और लोकार्पित भवन पर वृत्तचित्र का भी प्रदर्शन किया गया।

सोलहवीं विधान सभा का द्वितीय सत्र 3 जुलाई से, सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

जयपुर। सोलहवीं राजस्थान विधान सभा का द्वितीय सत्र बुधवार 3 जुलाई से आरंभ होगा। विधान सभा सचिवालय ने सत्र के संबंध में सभी आवश्यक व्यवस्थाओं का प्रबंध कर लिया है। सत्र के दौरान विधानसभा की सुरक्षा के विशेष इंतजाम किए गए हैं। अध्यक्ष श्री

वासुदेव देवनानी ने सत्र से संबंधित की जाने वाली व्यवस्थाओं की समीक्षा की। विधान सभा सत्र के दौरान विभिन्न विभागों द्वारा किए जाने वाले कार्यों के लिए विभागीय अधिकारियों के साथ प्रमुख सचिव श्री महावीर प्रसाद शर्मा ने चर्चा की। विभिन्न विभागों के अधिकारियों द्वारा कार्यों की प्रगति रिपोर्ट विधान सभा को प्रस्तुत की जा रही है।

विधान सभा सत्र के दौरान फोटो युक्त प्रवेश पत्र ही मान्य होगा। फोटोयुक्त क्यूआर कोड प्रवेश पत्र से ही अधिकारी एवं कर्मचारी विधान सभा में प्रवेश कर सकेंगे। क्यूआर कोड के स्कैन करने पर ही फ्लैग बैरियर खुलेगा। जिससे आगंतुक विधान सभा में प्रवेश कर सकेंगे। विधान सभा भवन से बाहर जाने के लिए यही प्रक्रिया अपनानी होगी। विधान सभा सदन में मोबाइल फोन का उपयोग नहीं किया जा सकेगा । मोबाइल फोन के उपयोग को सदन में निषेध किया गया है।

विधान सभा भवन परिसर में वही वाहन प्रवेश कर सकेंगे, जिन पर द्वितीय सत्र का सत्रकालीन वाहन प्रवेश पत्र लगा होगा। अधिकारी व कर्मचारियों के वाहनों का आवागमन गेट नंबर 1 उत्तर पूर्वी द्वारा से होगा और पार्किंग पूर्वी द्वार के भूतल पर की जा सकेगी। पत्रकारों के वाहनों का प्रवेश भी गेट नंबर 1 से होकर पूर्वी एवं दक्षिण कोने में बनाए गए स्थान पर पार्किंग की जायेगी।

सत्र के दौरान विधान सभा में मुख्यमंत्री व मंत्रीगण से मिलने आने वाले प्रतिनिधि मण्डलों के प्रवेश की व्यवस्था संबंधित से सहमति मिलने के पश्चात सम्पर्क अधिकारी द्वारा की जायेगी। मीडिया के छायाकार और कैमरामैनों का प्रवेश पश्चिमी द्वार के समीप निर्धारित स्थान तक होगा। अध्यक्ष श्री वासुदेव देवनानी के निर्देश पर छायाकारों और कैमरामैनों के लिए सत्र के दौरान विशेष व्यवस्था की गई है।

फील्ड अधिकारी आमजन की सुविधाओं से जुड़े विकास कार्यों की सतत मॉनिटरिंग करें : हीरालाल नागर

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

जयपुर। ऊर्जा विभाग एवं जिले के प्रभारी मंत्री हीरालाल नागर ने टोंक जिला कलेक्ट्रेट सभागार में जिला स्तरीय अधिकारियों की समीक्षा बैठक ली। नागर ने कहा कि राज्य सरकार भ्रष्टाचार के विरुद्ध जीरो टॉलरेंस की नीति से कार्य कर रही है। विकास कार्यों में गुणवत्ता की कमी को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। फील्ड अधिकारी आमजन की सुविधाओं से जुड़े विकास कार्यों की सतत मॉनिटरिंग करें। साथ ही, उनकी शिकायतों का त्वरित निस्तारण कर राहत प्रदान करें।

बैठक में प्रभारी मंत्री ने सीएमएचओ डॉ. अशोक कुमार यादव से जिले में चिकित्सा व्यवस्थाओं की जानकारी लेते हुए कहा कि बारिश के मौसम को देखते हुए मौसमी बीमारियों के उपचार को लेकर विभाग प्रो-एक्टिव रहे। रोगियों को त्वरित और बेहतर इलाज मिले।

जल जीवन मिशन की जिले में प्रगति की समीक्षा के दौरान नागर ने कहा कि विभाग पेंडिंग कार्य में तेजी लाएं। कार्य के दौरान तोड़ी जाने वाली सड़क का निर्माण शीघ्र एवं गुणवत्ता पूर्ण करें। उन्होंने जिला कलेक्टर डॉ. सौम्या झा को निर्देश दिए कि इन तोड़ी गई सड़क के पुनः निर्माण की गुणवत्ता को जांचने के लिए सार्वजनिक निर्माण विभाग के अधिकारी एवं अन्य सदस्यों की कमेटी बनाएं।

विद्युत विभाग के प्रगतिरत कार्यों की धीमी गति पर नाराजगी जाहिर करते हुए प्रभारी मंत्री ने अधीक्षण अभियंता एवं अधिशाषी अभियंता को गंभीरता से कार्य करने के निर्देश दिए। उन्होंने दोनों अधिकारियों को कारण बताओं नोटिस जारी करने के निर्देश दिए। उन्होंने आगामी बैठक में सवाई माधोपुर से प्रसारण के अधीक्षण अभियंता को बुलाने के लिए कहा।

नागर ने नगर परिषद आयुक्त ममता नागर से बारिश के दौरान जलभराव से निपटने की तैयारियों की जानकारी ली। उन्होंने कहा कि फ्लड कंट्रोल रूम के माध्यम से जल भराव की समस्याओं का शीघ्र समाधान हो। सार्वजनिक निर्माण विभाग के पूर्ण, प्रगतिरत कार्यों एवं नॉन पेचेबल सड़क के भेजे गए प्रस्ताव की जानकारी ली। बैठक में निवाई-पीपलू विधायक रामसहाय वर्मा, जिला प्रमुख सरोज बंसल, पूर्व विधायक अजीत सिंह मेहता समेत विभिन्न विभागों के अधिकारी मौजूद रहे।

युवाओं को रोजगार देने को कटिबद्ध हैं मुख्यमंत्री : भडाणा

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

अजमेर। राजस्थान देवनारायण बोर्ड के अध्यक्ष ओमप्रकाश भडाणा ने कहा है कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा युवाओं को रोजगार देने के लिये कटिबद्ध हैं और वह इसी लक्ष्य को लेकर काम कर रहे हैं । भडाणा शनिवार को अजमेर के जवाहर रंगमंच पर मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के वर्चुअल 'मुख्यमंत्री रोजगार उत्सव' युवा संवाद कार्यक्रम में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि राज्य और केंद्र की डबल इंजन की सरकार युवाओं के बेहतर भविष्य को लेकर दृढ़ संकल्प है। सभी रोजगारोन्मुख योजनायें पारदर्शी, समयबद्ध और निष्पक्ष होगी । भडाना ने नवनियुक्त अभ्यर्थियों से कहा कि आपने अपनी मेहनत और सामर्थ्य से अपने सपनों को साकार करने की शुरुआत कर दी है, लेकिन यह कभी मत भूलिये कि आपके सपनों को पूरा करने में ईश्वर के आशीर्वाद के साथ आपके माता-पिता का हाड़तोड़ परिश्रम एवं त्याग भी रहा है। उन्होंने अभ्यर्थियों से अपने परिवार के साथ-साथ समाज और राष्ट्र के विकास की जिम्मेदारी भी समझने का आग्रह किया । कार्यक्रम में मंत्री सुरेश सिंह रावत, संभागीय आयुक्त महेशचंद्र शर्मा, जिला कलेक्टर डॉ. भारती दीक्षित, उप महापौर नीरज जैन सहित जिले के कई अधिकारी उपस्थित थे। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने नवनियुक्त युवक-युवतियों से संवाद किया और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की ।

राजस्थान के पूर्व मंत्री के खिलाफ धोखाधड़ी का मामला दर्ज

बारां। राजस्थान में पूर्ववर्ती अशोक गहलोत सरकार में खान, गोपालन मंत्री रहे प्रमोद जैन भाया के खिलाफ बारां शहर कोतवाली थाने में धोखाधड़ी को लेकर प्राथमिकी दर्ज की गयी है। पार्षद शिवराज महावर की ओर दर्ज प्राथमिकी में बताया गया कि सभापति ज्योति पारस ने पति पूर्व सभापति कैलाश पारस एवं अन्य ने

प्रमोद भाया के पद का फायदा उठाते हुए अस्पताल रोड पर अग्रवाल धर्मशाला के पास खाली भूमि का नाम मात्र शुल्क में पट्टा बनवाकर फर्जीवाड़ा किया है, जबकि वो जमीन करोड़ों रूपए की है। पुलिस ने बताया कि पार्षद शिवराज महावर ने पूर्व मंत्री प्रमोद भाया, सभापति ज्योति पारस समेत अन्य कांग्रेस नेताओं के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज करायी है। मामले की जांच बृजेश सिंह उप निरीक्षक को सौंपी है। उल्लेखनीय है कि इससे पहले भी करीब आधा दर्जन के आसपास मुकदमें भाया और उनके करीबियों पर दर्ज हो चुके हैं। इनमें अधिकांश मुकदमे धोखाधड़ी, अवैध खनन और जमीन गबन के मामले दर्ज हैं। जिन पर कार्रवाई विचाराधीन है। इन्हीं मामलों को लेकर पिछले दिनों कांग्रेस के नेताओं ने मीडिया से बातचीत करते हुए प्रदेश सरकार पर हमला बोला था।

अभिनंदन

जयपुर में शनिवार को कथावाचक जयाकिशोरी का सिटी पैलेस में स्वागत एवं अभिनंदन करती उपमुख्यमंत्री दीया कुमारी।

जैन मंदिर में हुई चोरी का खुलासा, मुख्य आरोपी समेत चोरी का माल खरीदने वाला भी हिरासत में

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

अजमेर। अजमेर के दरगाह थाना क्षेत्र में बीते दिनों 800 साल पुराने जैन मंदिर में हुई चोरी के मामले में पुलिस ने मुख्य आरोपी व चोरी का माल खरीदने वाले सुनार को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने चांदी के छत्र को गलाकर बनाई गई सिल्ली भी बरामद कर ली है। फिलहाल दोनों से अन्य साथियों के बारे में पूछताछ की जा रही है। दरगाह थानाधिकारी नरेन्द्र जाखड़ ने बताया कि 21 जून को प्रदीप पाटनी की ओर से रिपोर्ट दी गई कि रात्रि के समय अज्ञात चोर गुफा वाले जैन मंदिर का ताला तोड़कर भगवान की मूर्ति पर लगे नौ चांदी के छत्र चोरी कर ले गए। पुलिस ने इस पर मुकदमा दर्ज कर करीब 200 सीसीटीवी फुटेज देखे, जिसमें चार संदिग्ध व्यक्ति नजर आए। ये रोडवेज बस स्टैंड के पास से कुचामन सीकर की तरफ

जाने वाली प्राइवेट बस में बैठते देखे गए। इसके बाद पुलिस ने मुख्य आरोपी सोहनलाल (36) पुत्र पेमाराम रेदास को पकड़ कर पूछताछ की तो चोरी करना कबूल कर लिया। थानाधिकारी नरेंद्र जाखड़ ने बताया कि चोरी किए गए छत्र शिवप्रकाश पुत्र लक्ष्मीनारायण सोनी को बेचना बताया। शिवप्रकाश ने पुछताछ करने पर चांदी के छत्रों को गलाकर एक सिल्ली बनाना बताया। जिस पर पुलिस ने उसके पास से 356 ग्राम की सिल्ली बरामद की है। फिलहाल पुलिस ने दोनों को गिरफ्तार कर लिया है और उनके अन्य साथियों के बारे में पूछताछ कर रही है।

राजस्थान में कई जगह भारी बारिश का अनुमान

जयपुर। राजस्थान में मानसून के कारण आगामी कुछ दिनों में भारी बारिश होने का अनुमान है। मौसम केंद्र जयपुर के अनुसार, बीते 24 घंटे में राज्य में कुछ स्थानों पर बादल गरजने के साथ हल्की से मध्यम वर्षा तथा कहीं-कहीं भारी वर्षा दर्ज की गई। इस दौरान सबसे अधिक बारिश पश्चिमी राजस्थान के रायसिंहनगर व पूर्वी राजस्थान के कामां (भरतपुर) में (68 मिलीमीटर) दर्ज की गई है। केंद्र ने पूर्वी राजस्थान के कुछ भागों में 29 जून से दो जुलाई के दौरान भारी बारिश होने का अनुमान जताया है। मौसम केंद्र ने बताया कि भरतपुर और जयपुर संभाग के कुछ भागों में 29 जून से दो जुलाई के दौरान कहीं-कहीं भारी और कहीं-कहीं अत्यधिक भारी बारिश होने की संभावना है।

कोई छात्र स्कूल से वंचित न रहे, यह देश की सबसे बड़ी सेवा होगी: योगी

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

लखनऊ/भाषा। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शनिवार को ड्रेस, स्टेशनरी एवं स्कूल बैग की खरीद के लिए प्रत्यक्ष लाभ अंतरण के मार्फत विद्यार्थियों के माता-पिता/अभिभावक के बैंक खातों में 1200-1200 रुपये भेजने की प्रक्रिया की शुरुआत की।

उन्होंने कहा, ''हम सभी की जिम्मेदारी बनती है कि कोई छात्र स्कूल से वंचित न रह जाए। हम अपनी इस जिम्मेदारी का निर्वहन करें, ये देश की सबसे बड़ी सेवा है। श्रीमद्भागवत गीता में तो किसी को शिक्षित करना सबसे पवित्र कार्य माना गया है।''एक बयान के मुताबिक आदित्यनाथ ने शनिवार को यहां एक कार्यक्रम में प्रदेश के मेधावी छात्र-छात्राओं को सम्मानित भी किया उन्होंने शिक्षा विभाग से जुड़े शिक्षकों और अधिकारियों से कहा कि आप इस पवित्र कार्य से जुड़े हुए हैं, इसलिए आपका आचरण एक अधिकारी की तरह नहीं, बल्कि समाज के एक मार्गदर्शक के रूप में, एक शिक्षक के रूप में होना चाहिए। योगी ने कहा, '' हमारे विद्यालय नवोन्मेष और शोध के नए केंद्र के रूप में स्थापित हों, हमारे छात्र-छात्राओं के अंदर कठिन से कठिन चुनौतियों से जूझने का जज्बा हो, इसके लिए हम उन्हें तैयार करें। ''

मेधावी छात्र-छात्राओं को सम्मानित करने के बाद मुख्यमंत्री आदित्यनाथ ने कहा कि सचमुच एक गुरु के लिए इससे बड़ी बात क्या हो सकती है कि जिसका उन्होंने मार्गदर्शन किया, वह देश-प्रदेश में उच्च स्थान प्राप्त कर उन्हें गौरवान्वित कर रहा है।

योगी आदित्यनाथ ने छात्र-छात्राओं को सफलता का मंत्र देते हुए कहा कि जीवन में किसी भी क्षेत्र में तुम्हें जाना हो, लेकिन याद रखना परिश्रम का कोई विकल्प नहीं हो सकता, जीवन में शॉर्टकट का रास्ता अपनाने वाला व्यक्ति कभी भी अपनी मंजिल को प्राप्त नहीं कर सकता। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा, उत्तर प्रदेश माध्यमिक संस्कृत शिक्षा परिषद, 'काउंसिल फॉर द इंडियन स्कूल सर्टिफिकेट एग्जामिनेशन' नई दिल्ली और केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड नई दिल्ली से जुड़े छात्र-छात्राओं को यहां सम्मानित किया गया है।

अनुप्रिया पटेल ने योगी आदित्यनाथ को लिखा पत्र

पिछड़ों का चयन नहीं किये जाने का आरोप

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

लखनऊ/भाषा। केंद्रीय मंत्री और अपना दल (सोनेलाल) की अध्यक्ष अनुप्रिया पटेल ने उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को पत्र लिखकर उनसे राज्य सरकार की सिर्फ साक्षात्कार आधारित नियुक्ति प्रक्रिया वाले आरक्षित पदों पर पिछड़ा वर्ग और अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग के अभ्यर्थियों को नहीं चुने जाने की शिकायत की है। पटेल ने 27 जून को मुख्यमंत्री को लिखे पत्र में कहा, '' आपको बताना है कि पिछड़ा वर्ग और अनुसूचित जाति/जनजाति वर्ग के अभ्यर्थी लगातार सम्पर्क कर उन्हें अवगत करा रहे हैं कि उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा आयोजित सिर्फ साक्षात्कार आधारित नियुक्ति प्रक्रिया वाली विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में अन्य पिछड़ा वर्ग एवं अनुसूचित जाति/जनजाति वर्ग के लिये आरक्षित पदों पर इन वर्गों के अभ्यर्थियों को प्रायः 'नॉट फाउंड सूटेबल' (योग्य नहीं पाया गया) घोषित करके उनका चयन नहीं किया जाता।'' उन्होंने आरोप लगाया, ''सिर्फ साक्षात्कार आधारित नियुक्ति प्रक्रिया वाली प्रतियोगी परीक्षाओं में इन आरक्षित पदों के लिये यह प्रक्रिया कई बार अपना करके अंत में उन्हें अनारक्षित घोषित कर दिया जाता है।'' हालांकि, उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग के एक अधिकारी ने अनुप्रिया पटेल के आरोपों का खंडन करते हुए बताया कि अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) के लिए आरक्षित पदों पर भर्ती नहीं होने की स्थिति में वे पद कैरी फारवर्ड कर दिए जाते हैं अर्थात वे पद विभाग को वापस कर दिए जाते हैं। उन्होंने कहा कि नियमावली में यह प्रावधान है कि यदि अन्य पिछड़ा वर्ग के लिए आरक्षित पद पर योग्य उम्मीदवार नहीं मिलते तो उन पदों को संबंधित विभाग को वापस कर दिया जाए। उन्होंने कहा कि अनुप्रिया पटेल का यह आरोप गलत है कि ओबीसी के लिए आरक्षित पदों पर भर्ती नहीं होने पर उन्हें अनारक्षित वर्ग में डाल दिया जाता है। पटेल ने पत्र में मुख्यमंत्री से कहा, ''आप भी सहमत होंगे कि अन्य पिछड़ा वर्ग एवं अनुसूचित जाति/ जनजाति वर्ग के अभ्यर्थी भी इन परीक्षाओं के लिये न्यूनतम अर्हता की परीक्षा भी अपनी योग्यता के आधार पर ही पास करते हैं तथा अपनी योग्यता के आधार पर ही इन साक्षात्कार आधारित परीक्षाओं के लिए वे पात्र पाए जाते हैं। अत: अन्य पिछड़ा वर्ग एवं अनुसूचित जाति/जनजाति वर्ग के अभ्यर्थियों को बार-बार 'नॉट फाउंड सूटेबल' घोषित करके उनको नियुक्ति के लिए सफल न पाया जाना समझ के परे है।'' केन्द्रीय मंत्री ने मुख्यमंत्री से कहा है, ''विनम्र अनुरोध है कि राज्य सरकार के अधीन सभी संस्थाओं द्वारा आयोजित सिर्फ साक्षात्कार आधारित नियुक्ति प्रक्रिया वाली प्रतियोगी परीक्षाओं में पिछड़ा वर्ग और अनुसूचित जाति/जनजाति वर्ग के लिये आरक्षित पदों पर 'नॉट फाउंड सूटेबल' की प्रक्रिया बार-बार अपनाते हुए अंत में उन्हें अनारक्षित घोषित करने की व्यवस्था पर तत्काल रोक लगाने एवं इन वर्गों से आने वाले अभ्यर्थियों में उत्पन्न हो रहे आक्रोश को रोकने का कष्ट करें।''

भाजपा ने कूचबिहार में महिला नेता के उत्पीड़न मामले में सीबीआई जांच की मांग की

कोलकाता/भाषा। पश्चिम बंगाल में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की प्रदेश महासचिव अग्निमित्रा पॉल ने शनिवार को कूचबिहार जिले में पार्टी की एक महिला नेता को निर्वस्त्र करने और शारीरिक यातना देने की कथित घटना की केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) से जांच कराए जाने की मांग की और पुलिस पर असली अपराधियों के खिलाफ कार्रवाई नहीं करने का आरोप लगाया। जिले के माथाभांगा इलाके में भाजपा प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व करने वाली पॉल ने दावा किया कि पार्टी की स्थानीय इकाई के अल्पसंख्यक मोर्चा की अध्यक्ष महिला को 25 जून को टीएमसी के बदमाशों ने उस समय पीटा और निर्वस्त्र कर दिया, जब वह खेत में मवेशी चरा रही थी। पॉल ने कहा, ''एक महिला मुख्यमंत्री के शासन में, बंगाल की माताओं, बहनों और अल्पसंख्यक समुदाय का प्रतिनिधित्व करने वाली एक महिला को तृणमूल कांग्रेस के स्थानीय नेता और उसके सहयोगियों द्वारा सरेआम पीटा गया, निर्वस्त्र किया गया और गाली दी गई।'' उन्होंने कहा, ''पुलिस और सरकार एक महिला के खिलाफ इस तरह की भीषण हिंसा पर आंखें मूंदे हुए हैं। हमें इस प्रशासन पर कोई भरोसा नहीं है। हम सीबीआई जांच की मांग करते हैं।''

असम विश्वविद्यालय ने हिंसा प्रभावित मणिपुर के छात्रों के लिए छात्रवृत्ति का किया एलान

गुवाहाटी/भाषा। असम के एक निजी विश्वविद्यालय ने शनिवार को हिंसा-प्रभावित मणिपुर के पात्र विद्यार्थियों के लिए प्रवेश शुल्क माफ करने का एलान किया है। एक बयान के मुताबिक, गुवाहाटी स्थित 'रॉयल ग्लोबल विश्वविद्यालय ने 'होप फॉर मणिपुर स्कॉलरशिप' शुरू की है, जो पड़ोसी राज्य में जातीय संघर्ष से प्रभावित परिवारों के बच्चों की मदद करेगा। इसमें बताया गया कि इस छात्रवृत्ति का उद्देश्य मणिपुर में जारी हिंसा से प्रभावित छात्रों और परिवारों की मदद करना है, जिससे वे बिना किसी परेशानी के शिक्षा हासिल कर सकें।

बयान में कहा गया कि यह पहल विश्वविद्यालय के एक बड़े अभियान ''पूर्वोत्तर इंतजार नहीं कर सकता। पढ़ो! कुछ बनो'' का हिस्सा है। हालांकि, मणिपुर के लिए इस अभियान का नाम बदलकर ''मणिपुर कठिन समय में भी इंतजार नहीं कर सकता'' कर दिया गया है। विश्वविद्यालय के कुलाधिपति ए.के. पंसारी ने कहा, ''शिक्षा आशा की किरण है और उज्ज्वल भविष्य की राह दिखाती है। इस छात्रवृत्ति के माध्यम से हमारा उद्देश्य उन छात्रों को वित्तीय राहत और सहायक वातावरण प्रदान करना है, जिनका जीवन हिंसा के कारण प्रभावित हुआ है।''

झारखंड और आदिवासियों का विकास भाजपा की प्राथमिकता: हिमंत विश्व शर्मा

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

रांची/भाषा। असम के मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा शनिवार को भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेताओं की बैठक में भाग लेने रांची पहुंचे। उन्होंने कहा कि झारखंड का विकास और आदिवासी लोगों का कल्याण भाजपा की प्राथमिकता है।

भाजपा के चुनाव सह प्रभारी शर्मा राज्य में आगामी विधानसभा चुनाव के लिए पार्टी की रणनीति पर चर्चा करने के लिए पार्टी नेताओं से मिलेंगे। उन्होंने कहा, ''पार्टी की प्राथमिकता झारखंड का विकास और यहां के अनुसूचित जनजाति समुदाय का कल्याण है। पिछले पांच वर्षों से राज्य में कोई सरकार नहीं है। पिछले पांच वर्षों में राज्य में महिलाओं और आदिवासियों पर अत्याचार कई गुना बढ़ गए हैं।''

शर्मा ने कहा कि जब भाजपा का घोषणापत्र आएगा, तो पता चलेगा कि पार्टी ने अगले पांच साल में आदिवासी लोगों के लिए कितना काम करने की योजना बनाई है।

पूर्व मुख्यमंत्री और झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) के नेता हेमंत सोरेन को जमानत मिलने के बारे में पूछे जाने पर शर्मा कहा, ''भारतीय जनता पार्टी इस बात का हिसाब नहीं रखती कि कौन जेल जा रहा है और कौन जमानत पर बाहर आ रहा है।''

आगामी चुनाव में सोरेन की मौजूदगी से भाजपा पर क्या असर पड़ेगा, इस बारे में पूछे गए सवाल पर शर्मा ने कहा कि जब वह जेल में थे तब भाजपा ने हाल में संपन्न लोकसभा चुनाव में राज्य में नौ सीट जीतीं। शर्मा ने कहा कि सोरेन के जेल से बाहर आने के बाद भारतीय जनता पार्टी और अधिक सीट जीतेगी।

उच्च न्यायालय द्वारा धनशोधन के एक मामले में जमानत दिए जाने के बाद सोरेन को शुक्रवार को रिहा कर दिया गया। न्यायालय ने कहा कि सोरेन प्रथम दृष्टया दोषी नहीं हैं और जमानत पर छूटने के बाद याचिकाकर्ता द्वारा कोई अपराध किए जाने की कोई संभावना नहीं है।

झारखंड की 81 विधानसभा सीट में से 28 सीट अनुसूचित जनजाति समुदाय के लिए आरक्षित हैं। 2019 के विधानसभा चुनाव में झामुमो के नेतृत्व वाले गठबंधन ने 26 आदिवासी सीटों पर जीत हासिल की थी।

शर्मा और केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने इस साल के अंत में होने वाले विधानसभा चुनाव के लिए खाका तैयार करने को लेकर 23 जून को पार्टी नेताओं, सांसदों, विधायकों और कार्यकर्ताओं के साथ कई बैठकें कीं। चौहान को झारखंड के लिए भाजपा का चुनाव प्रभारी नियुक्त किया गया है।

जनता ने मोदी की शासन शैली को नकारा, फिर भी वह इस संदेश नहीं समझ रहे: सोनिया

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। कांग्रेस संसदीय दल की प्रमुख सोनिया गांधी ने शनिवार को कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी लोकसभा चुनाव में जनादेश के संदेश की अनदेखी कर टकराव को महत्व देना जारी रखे हुए हैं और ऐसे पेश आ रहे हैं कि मानो कुछ बदला ही नहीं है। उन्होंने अंग्रेजी दैनिक 'द हिंदू' में लिखे लेख में यह आरोप भी लगाया कि लोकसभा में 1975 के आपातकाल की निंदा की गई ताकि संविधान और संवैधानिक संस्थाओं पर मोदी सरकार के हमले से ध्यान हटाया जा सके।

सोनिया गांधी ने लेख में कहा, ''4 जून, 2024 को हमारे देश के मतदाताओं ने अपना फैसला स्पष्ट और जोरदार तरीके से सुनाया। यह उस प्रधानमंत्री के लिए व्यक्तिगत, राजनीतिक और नैतिक हार का संकेत है, जिन्होंने चुनाव अभियान के दौरान खुद को दैवीय दर्जा दिया था।'' उन्होंने दावा किया कि इस जनादेश ने न केवल इस तरह के दिखावों को नकार दिया, बल्कि यह विभाजन, कलह और नफरत की राजनीति की स्पष्ट अस्वीकृति थी तथा नरेन्द्र मोदी के शासन के कामकाज और शैली दोनों को खारिज किया जाना था।'' सोनिया गांधी ने कहा, ''फिर भी, प्रधानमंत्री ऐसे पेश आ रहे हैं जैसे कि कुछ भी नहीं बदला है। वह आम सहमति के मूल्यों के बारे में उपदेश देते हैं लेकिन टकराव को महत्व देना जारी रखते हैं। इस बात का जरा भी प्रमाण नहीं मिलता है कि उन्होंने चुनावी नतीजे को समझ लिया है या करोड़ों मतदाताओं द्वारा उन्हें भेजे गए संदेश पर कोई विचार किया है।'' उन्होंने कहा, ''पाठकों को याद दिलाना चाहूंगी कि जब उनके दूतों ने अध्यक्ष पद के लिए सर्वसम्मति की मांग की थी तो 'इंडिया' गठबंधन की पार्टियों ने प्रधानमंत्री से क्या कहा था...हमने कहा कि हम सरकार का समर्थन करेंगे, लेकिन परंपरा को ध्यान में रखते हुए यह उचित था और उम्मीद की जा सकती थी कि उपाध्यक्ष का पद विपक्ष के किसी सदस्य को दिया जाएगा।''

क्या विशेष दर्जे की मांग का प्रस्ताव अपने कैबिनेट से पारित कराने की हिम्मत दिखाएंगे नीतीश: कांग्रेस

नई दिल्ली/भाषा। कांग्रेस ने जनता दल (यूनाइटेड) द्वारा बिहार के लिए विशेष राज्य के दर्जे की मांग फिर उठाए जाने के बाद शनिवार को कहा कि क्या मुख्यमंत्री नीतीश कुमार इस मांग को लेकर अपने कैबिनेट से प्रस्ताव पारित कराने की हिम्मत दिखाएंगे। पार्टी महासचिव जयराम रमेश ने यह भी कहा कि आंध्र प्रदेश में सत्तारूढ़ तेलुगु देशम पार्टी (तेदेपा) को भी विशेष राज्य के दर्जे के संदर्भ में अपना रुख स्पष्ट करना चाहिए। जद (यू) ने राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में बिहार के लिए विशेष राज्य के दर्जे की अपनी वर्षों पुरानी मांग भी दोहराई। रमेश ने पोस्ट किया, ''जद (यू) ने एक प्रस्ताव पारित करके बिहार को विशेष राज्य का दर्ज़ा देने की मांग दोहराई है।'' उन्होंने सवाल किया, ''क्या मुख्यमंत्री राज्य के कैबिनेट से भी ऐसा प्रस्ताव पारित कराने की हिम्मत दिखाएंगे। क्या बिहार के मुख्यमंत्री पूरे दमखम के साथ इस मांग को रखेंगे?''

विधानसभा चुनाव के बाद झारखंड से भाजपा का सफाया हो जाएगा : हेमंत

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

रांची/भाषा। झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने शनिवार को भाजपा पर उनके खिलाफ साजिश रचने का आरोप लगाया और दावा किया कि आगामी विधानसभा चुनाव के बाद भाजपा का राज्य से सफाया हो जाएगा।

झामुमो कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए सोरेन ने कहा कि उन्हें जेल में बंद करने की साजिश रचने वालों के खिलाफ विद्रोह होगा और झारखंड के लोग भाजपा को नहीं बख्शेंगे। झामुमो के कार्यकारी अध्यक्ष ने कहा, ''भाजपा के ताबूत में आखिरी कील ठोकने का समय आ गया है। आने वाले दिनों में झारखंड से भाजपा का सफाया हो जाएगा।'' धन शोधन के एक मामले में झारखंड उच्च न्यायालय द्वारा जमानत दिए जाने के बाद सोरेन को शुक्रवार को बिरसा मुंडा जेल से रिहा किया गया। अदालत ने कहा है कि प्रथम दृष्टया, हेमंत दोषी नहीं हैं और जमानत पर रिहाई के दौरान याचिकाकर्ता द्वारा कोई अपराध किए जाने की कोई आशंका नहीं है। झामुमो नेता को प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने 8.36 एकड़ भूमि पर अवैध कब्जे से जुड़े धन शोधन मामले की जांच के सिलसिले में 31 जनवरी को गिरफ्तार किया था। हेमंत सोरेन ने आरोप लगाया कि भाजपा ने सभी संवैधानिक प्रतिष्ठानों पर नियंत्रण कर लिया है, लेकिन लोगों ने हाल में संपन्न लोकसभा चुनाव में उसे सबक सिखाया है।

कांग्रेस ने अडाणी समूह से जुड़ी रिपोर्ट को लेकर प्रधानमंत्री पर निशाना साधा

नई दिल्ली/भाषा। कांग्रेस ने शनिवार को उस खबर को लेकर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पर निशाना साधा जिसमें कहा है कि अडाणी समूह ने अपनी सौर विनिर्माण परियोजना में मदद के लिए आठ चीनी कंपनियों का चयन किया है। पार्टी महासचिव जयराम रमेश ने कहा कि यह सुनिश्चित करना होगा कि करदाताओं के पैसे से चीनी कंपनियों को फायदा न हो। उन्होंने 'एक्स' पर पोस्ट किया, ''नॉन-बायोलिकल' प्रधानमंत्री ने 19 जून, 2020 को गलवान झड़प के बाद देश को यह कहकर बदनाम किया था कि ''ना कोई हमारी सीमा में घुस आया है, न ही कोई घुसा हुआ है''। रमेश ने कटाक्ष करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री अपने एक ''टेम्पोवाला'' मित्र की मदद के लिए चीनी श्रमिकों को उदारतापूर्वक वीजा जारी करने में कोई हिचकिचाहट नहीं दिखाते हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने लोस चुनाव के प्रचार के दौरान राहुल गांधी पर निशाना साधते हुए कहा था कि कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष अडाणी और अंबानी को ''गाली देना'' बंद कर दिया है, क्या टेम्पो भरकर नोट कांग्रेस के लिए पहुंचे हैं। अडाणी समूह ने कथित तौर पर सौर विनिर्माण परियोजना में मदद के लिए 8 चीनी कंपनियों का चयन किया है और 30 चीनी श्रमिकों के लिए वीजा जारी करने के लिए विशेष अनुमति मांगी है।

न्यायपालिका राजनीतिक पूर्वाग्रह से मुक्त होनी चाहिए: ममता बनर्जी

कोलकाता/भाषा। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने किसी भी राजनीतिक पूर्वाग्रह से मुक्त न्यायपालिका का आह्वान करते हुए शनिवार को कहा कि इसे बिल्कुल निष्पक्ष और ईमानदार होना चाहिए। बनर्जी ने यह भी कहा कि न्यायपालिका लोकतंत्र, संविधान और लोगों के हितों के संरक्षण के लिए भारत की नींव का बड़ा स्तंभ है। मुख्यमंत्री ने यहां राष्ट्रीय न्यायिक अकादमी (पूर्वी क्षेत्र) के द्वितीय क्षेत्रीय सम्मेलन के उद्घाटन के अवसर पर कहा, ''कृपया ध्यान रखें कि न्यायपालिका में कोई राजनीतिक पक्षपात न हो। न्यायपालिका पूरी तरह से पक्षपात रहित, ईमानदार और पवित्र होनी चाहिए। लोगों को इसकी पूजा करनी चाहिए।'' कार्यक्रम में प्रधान न्यायाधीश डी वाई चंद्रचूड़ और कलकत्ता उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश टी एस शिवज्ञानम भी मौजूद थे।

बनर्जी ने कहा कि न्यायपालिका लोगों के लिए एक महत्वपूर्ण मंदिर है और न्याय प्रदान करने का सर्वोच्च प्राधिकार है। उन्होंने कहा, ''यह एक मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा और गिरजाघर की तरह है। न्यायपालिका लोगों की, लोगों द्वारा और लोगों के लिए है...और न्याय पाने और संवैधानिक अधिकारों को बनाए रखने के लिए अंतिम मंच है।'' उन्होंने सम्मेलन में भाग ले रहे पूर्वोत्तर और अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह के न्यायाधीशों और न्यायिक अधिकारियों को नजरअंदाज किए जाने का आरोप लगाते हुए आग्रह किया कि उन्हें बड़े अवसर दिए जाएं। अदालतों में डिजिटलीकरण के लिए प्रधान न्यायाधीश चंद्रचूड़ की सराहना करते हुए बनर्जी ने कहा कि पश्चिम बंगाल ''ई-गवर्नेंस में सभी राज्यों में नंबर वन है।''

मेरे पास कोई प्रायोजक नहीं, इसलिये खुद में सुधार करने में जूझ रही हूं: लिली दास

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

पंचकुला (हरियाणा)/भाषा। धाविका लिली दास ने जब 2016 में भारतीय एथलेटिक्स में शुरुआत की थी तो उन्हें उम्मीद की किरण के तौर पर देखा जा रहा था लेकिन चीजें इतनी अच्छी नहीं रहीं और आठ साल बाद भी वह अपने पहले सीनियर अंतरराष्ट्रीय पदक की कोशिश में जुटी हैं।

प्रायोजकों की कमी के कारण लिली शीर्ष स्तर पर अपनी काबिलियत नहीं दिखा सकी हैं लेकिन 2016 में फेडरेशन कप की जूनियर स्तर की 1500 मीटर स्पर्धा में राष्ट्रीय रिकॉर्ड बनाने वाली पश्चिम बंगाल की यह एथलीट अभी हार मानने को तैयार नहीं है। छब्बीस साल की लिली ने पोलैंड के बिडगोस्ज में 2016 विश्व जूनियर चैम्पियनशिप के लिए क्वालीफाई किया था जिसमें भाला फेंक ओलंपिक चैम्पियन नीरज चोपड़ा ने स्वर्ण पदक जीता था। इसमें लिली 1500 मीटर के फाइनल में 10वें स्थान पर रही थीं। इसी साल लिली ने एशियाई जूनियर चैम्पियनशिप में 800 मीटर और 1500 मीटर दोनों में स्वर्ण पदक जीते थे। लेकिन सीनियर स्तर पर उन्होंने 2019 दक्षिण एशियाई खेलों की 800 मीटर स्पर्धा में कांस्य पदक जीतने के अलावा कोई अंतरराष्ट्रीय पदक नहीं जीता है।

लिली ने शनिवार को पीटीआई से कहा, ''मैंने जूनियर स्तर पर अंतरराष्ट्रीय पदक जीते हैं लेकिन सीनियर स्तर पर अंतरराष्ट्रीय पदक नहीं जीत पा रही। 2017 एशियाई चैम्पियनशिप में भी मैं पदक से चूक गयी थी। मैं 2018 और 2022 एशियाई खेलों में भी हिस्सा लेने से चूक गयी थी। यह दुखद हिस्सा है।''

भारतीय महिला टीम ने टेस्ट क्रिकेट के इतिहास में रिकॉर्ड स्कोर बनाया

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

चेन्नई/भाषा। भारतीय टीम ने शनिवार को यहां दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ एकमात्र टेस्ट के दूसरे दिन महिला टेस्ट क्रिकेट के इतिहास का सबसे बड़ा स्कोर बनाते हुए छह विकेट पर 603 रन पर पहली पारी घोषित की। इसके बाद मारिजाने काप और सुने लुस की मदद से दक्षिण अफ्रीका ने इसके जवाब में स्टंप तक चार विकेट पर 236 रन बना लिये थे।

मेजबान टीम ने बीती रात के चार विकेट पर 525 रन के स्कोर से खेलना शुरू किया। अपना पांचवां टेस्ट खेल रही कप्तान हरमनप्रीत कौर ने लंबे प्रारूप में अपना पहला अर्धशतक बनाया और 115 गेंद में 69 रन की पारी खेली जबकि ऋचा घोष ने भी भारत का दबदबा जारी रखते हुए करियर की सर्वश्रेष्ठ 86 रन की पारी खेली।

इन दोनों ने मिलकर पांचवें विकेट के लिए 143 रन की साझेदारी निभायी। भारत ने 576 रन बनाते ही महिला टेस्ट क्रिकेट में आस्ट्रेलिया द्वारा बनाया पिछला नौ विकेट पर 575 रन का सर्वोच्च टीम स्कोर का रिकॉर्ड भी तोड़ दिया।

हरमनप्रीत के टुमी सेखुखुने की गेंद पर पगबाधा आउट होते ही 593 रन पर यह साझेदारी टूट गयी। इसके 10 रन बाद ही ऋचा भी नोनकुलुलेको मलाबा की गेंद पर पगबाधा आउट हो गयी और भारतीय कप्तान ने पारी घोषित कर दी। दक्षिण अफ्रीका के शीर्ष क्रम ने भी शानदार जज्बा दिखाते हुए पारी की शुरुआत की जिसमें सुने लुस (65 रन) और मारिजाने (नाबाद 69 रन) की अर्धशतकीय पारियों से स्टंप तक चार विकेट पर 236 बनाने में मदद की। अब टीम भारत से 367 रन से पिछड़ रही है।

दक्षिण अफ्रीका के लिए डेल्मी टकर सबसे सफल गेंदबाज रही जिन्होंने 141 रन देकर दो विकेट झटके जबकि मसाबाटा क्लास सबसे फिकायती रहीं। दक्षिण अफ्रीका ने बल्ले से अच्छी शुरुआत करते हुए लंच ब्रेक तक बिना विकेट गंवाये 29 रन बना लिये थे। लेकिन स्नेह राणा ने दक्षिण अफ्रीकी कप्तान लौरा वुलवार्ट (20) को पगबाधा आउट कर 33 रन पर पहला झटका दिया। फिर एनेके बॉश का साथ निभाने लुस उतरीं। इस जोड़ी ने बल्लेबाजों के मुफीद विकेट का पूरा फायदा उठाया और दूसरे विकेट के लिए 63 रन की साझेदारी निभायी। राणा ने ही इस भागीदारी का अंत किया जब बॉश उनकी गेंद पर दीप्ति शर्मा को कैच दे बैठीं। अब काप और लुस क्रीज पर थीं। दक्षिण अफ्रीका ने चाय ब्रेक तक दो विकेट गंवाकर 106 रन बनाये। अंतिम सत्र में दोनों बल्लेबाजों ने अपने अर्धशतक पूरे करते हुए 93 रन की साझेदारी की जिसका अंत दीप्ति शर्मा ने लुस को पगबाधा आउट कर किया। इससे स्कोर तीन विकेट पर 189 रन हो गया। यह दक्षिण अफ्रीका की इस प्रारूप में तीसरे विकेट के लिए सर्वश्रेष्ठ साझेदारी भी है। नौ गेंद बाद डेल्मी टकर खाता भी नहीं खोल सकीं और राणा की गेंद का शिकार हुईं। काप और नाडिने डि क्लर्क ने मिलकर पांचवें विकेट के लिये स्टंप तक नाबाद 38 रन की साझेदारी निभा ली थी। भारत के लिए राणा ने गेंद से शानदार प्रदर्शन करते हुए 61 रन देकर तीन विकेट झटके जबकि दीप्ति शर्मा ने 40 रन देकर एक विकेट हासिल किया।

सुविचार

मूर्ख व्यक्ति दूसरों को बर्बाद करने की चाहत में, इतना अंधा हो जाता हैं, कि उसको खुद के बर्बाद होने का पता नही चलता।

ट्वीट

प्रसिद्ध इतिहासकार एवं ख्यातिप्राप्त लेखक श्री नाहर सिंह जी जसोल के निधन का दुःखद समाचार प्राप्त हुआ। प्रभु श्रीराम जी, दिवंगत पुण्यात्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान एवं शोक संतप्त परिजनों को यह आघात सहन करने की शक्ति प्रदान करें, ऐसी कामना करती हूँ।

-दीया कुमारी

धरियावद, प्रतापगढ़ के मायदा घाटी में यात्रियों से भरी बस के दुर्घटनाग्रस्त होने का समाचार सुनकर मन अत्यंत दुखी व व्यथित है। संबंधित अधिकारियों को प्रभावितों को हर संभव मदद उपलब्ध कराने हेतु आवश्यक दिशा निर्देश दिए गए हैं।

-भजनलाल शर्मा

दो कहानी

अनुराग शर्मा

जाके कभी न परी बिवाई

रंग डालने का समय गुजर चुका था। पिचकारियाँ रखी जाने लगी थी। फिर भी होली के रंग हर तरफ बिखरे थे लाल हरे लोगों के बीच सुनहरी या सफेदी पुते चेहरे भी हर तरफ दिख रहे थे। बरेली में यह समय था मोर्चा लड़ने का। मोर्चे की परंपरा कितनी पुरानी है पता नहीं मगर मोर्चा लड़ने के लिए लगभग हर घर में पीढ़ियों पुराना पीतल का हैंडपंप मिल जाएगा। यह पंप एक बड़ी परंपरागत पिचकारी जैसे होते हैं। एक बड़ी फूँकनी के भीतर एक छोटी फूँकनी। एक सिरे पर तीखी धार फेंकने के लिए पतला सा मुँह और दुसरे छोर पर जुड़ा हुआ एक लंबा सा रबड़ का पाइप जिसका दूसरा सिरा पानी से भरे लोहे के बड़े कढ़ाह में डाल दिया जाता था। लोहे की वर्गाकार पत्तियों को जोड़कर बनाए हुए यह कढ़ाह किसने बनाए थे यह भी मुझे नहीं मालूम मगर इतना मालूम है कि ये पूरा साल किसी नुक्कड़, चौक या चौराहे पर उपेक्षित से पड़े रहते थे, सिवाय एक दिन के।

धुलेड़ी यानी बड़ी होली वाले दिन बारह बजते ही हर ओर दो-दो लोग अपने-अपने पंप लिए हुए मोर्चा लड़ते नजर आते थे। दोनों खिलाड़ी अपनी आँख बचाकर अपने प्रतिद्वंद्वी की आँख को निशाना बनाते थे। जो मैदान छोड़ देता उसकी हार होती थी और उसकी जगह लेने कोई और आ जाता था। हमारा पंप औरों से भिन्न था। ताँबे का बना और काफी छोटा। हलके पंप की धार दूसरे पंपों जैसी जानलेवा नहीं थी। मगर उसे चलाना भी औरों से आसान था। यह इसी पंप का कमाल था जो मैं मोर्चे में कभी भी नहीं हारा - सामने कोई भी महारथी हो।

वज्रांग के लिए यह सब नया था। वह दिल्ली से आया था। हम दोनों एक ही उम्र के थे। उसका दाखिला भी मेरे ही स्कूल में हुआ। वह खिलाड़ी भी था और पढ़ाकू भी। शिक्षकों का चहेता था लेकिन काफी गंभीर और अंतर्मुखी। जल्दी ही हम दोनों में दोस्ती भी हो गई। उसके पिता नहीं थे। माँ एक सरकारी बैंक में काम करती थीं और 8-10 महीने पहले ही उनका तबादला बरेली में बड़ा बाजार शाखा में हुआ था। बरेली में यह उसकी पहली होली थी। वह बहुत ही उत्साहित था, खासकर हम लोगों को मोर्चा लड़ते देखकर। उसके उत्साह को देखकर मैंने जल्दी-जल्दी उसे पंप का प्रयोग बताया। सामने एक दूसरा पंप माँगकर पानी से आँख बचाने और सामने वाली आँख पर अचूक निशाना लगाने की तकनीक भी सिखाई। कुछ ही देर में वह अपनी बाजी के लिए तैयार था।

मोर्चे खेल-खेलकर जब हम दोनों के ही हाथ थक गए तब हमने घर की राह ली। वज्रांग बहुत खुश था। पहली बार उसने होली का ऐसा आनंद उठाया था। अपनी प्रकृति के उलट आज वह खूब बातें कर रहा था। उसने बताया कि उसके पिताजी के जाने के बाद से क्या होली, क्या दीवाली सब उत्सव बेमजा हो गए थे। वज्रांग और उसके माता-पिता की छोटी सी दुनिया बहुत खूबसूरत थी। सब कुछ बढ़िया चल रहा था। पिता एक बैंक में काम करते थे जबकि माँ घर पर रहकर वज्रांग की देखभाल करती थी।

इतवार का दिन था। उस दिन वज्रांग को हल्का सा बुखार था। उसके न करते-करते भी पिताजी तिलक नगर चौक तक चले गए उसके लिए दवा लेने। दस मिनट की कहकर गए थे मगर दरवाजे की घंटी बजी चार घंटे के बाद। देखा तो दो पुलिसवाले खड़े थे। उन्होंने ही वह दुखद खबर दी। ढोल-ताशे की आवाज ने याद दिलाया कि होली की वार्षिक राम बरात का जुलूस निकल रहा था। हम दोनों ने रुककर कुछ देर तक उस अनोखी रंग-बिरंगी शोभा-यात्रा का मजा लिया और फिर जल्दी-जल्दी घर की तरफ बढ़ने लगे। शाम को गुलाबराय के होली मिलाप के लिए रगड़-रगड़कर रंग जो साफ करना था। आज के दिन जल-व्यवस्था का भी कोई भरोसा नहीं था। देर होगी तो शायद नहाने लायक पानी भी मुश्किल हो।

कुल्हाड़ा पीर के चौराहे पर एक मजमा सा लगा हुआ था। भीड़ के बीच में से इतना ही दिखा जैसे लाल अबीर में लिपटी हुई कोई मानव मूर्ति निश्चल पड़ी हो। भीड़ से पूछा तो किसी ने कहा, लोट रहे हैं भंग के रंग में, होली है भैय्ये! भीड़ में से ही किसी और ने जयकारा लगाया, होलिका मैया की... जय सारी भीड़ ने समवेत स्वर में कहा और अपने-अपने रस्ते लग गए।

रंगीन मूर्ति अब अकेली थी। वज्रांग उत्सुकतावश उधर बढ़ा तो मैंने हाथ पकड़कर उसे रोका, नशेड़ियों का क्या भरोसा, गाली वगैरा जैसे मौखिक अपमान तो उनके लिए सामान्य बात है, कभी कभार वे हिंसक भी हो उठते हैं।

वज्रांग मेरा हाथ छुड़ाकर मूर्ति के पास पहुँचा, और उसे पकड़कर हलके से हिलाया। मैं भी उसके पीछे-पीछे गया। मूर्ति ने एक बार आँखें खोली और फिर बिना कुछ कहे शांति से बंद कर ली। वज्रांग ने दिखाया कि उसके सर के नीचे का लाल द्रव रंग नहीं रक्त था। तब तक मैंने मूर्ति के रंगों के पीछे छिपे चेहरे को पहचान लिया था। वह भग्गा दही वाला था। बजरिया के पीछे चौक में कहीं रहता था। वज्रांग ने पास से गुजरते हुए एक रिक्शे को हाथ देकर रोका और भग्गा के निढाल शरीर को रिक्शा पर चढ़ाने लगा। उसका उद्देश्य समझकर मैंने भी सहायता की और उसे बीच में करके हम दोनों इधर-उधर बैठ गए। तभी मुझे उस तरफ का ही एक लड़का बरात से वापस आता दिखा तो मैंने उसे भग्गा के घरवालों को गंगवार नर्सिंग होम भेजने को कहा।

जब तक हम लोगों ने भग्गा को भर्ती कराया, उसके परिवार के लोग वहाँ पहुँच गए थे। कुछ ने उसे सँभाला और बाकी हमसे सवालात करने लगे। मैंने देखा कि अभी तक इतना साहस दिखाने वाला वज्रांग एकदम से बहुत विचलित सा लगा। मैंने भग्गा के घरवालों को सारी बात बताई और वज्रांग को साथ लेकर घर आ गया।

शाम को होली मिलन के लिए तैयार होकर जब मैं वज्रांग को लेने पहुँच तो भग्गा के बेटों को उसके घर से निकलते देखा। मुझे देखकर वे दोनों रुके और बताया कि भग्गा बिलकुल ठीक है। अगर हम दोनों उसे नहीं देखते तो शायद वह ज्यादा खून बहने से ही मर गया होता। मरने की बात सुनते ही एक सिहरन सी दौड़ गई।

वज्रांग अपने कमरे के एक कोने में जमीन बैठा था। मोड़े हुए घुटनों को दोनों हाथों से घेरे हुए। उसने सर उठाकर मुझे देखा। गीली आँखों के बावजूद मुस्कुराने की कोशिश की। मैं साथ ही बैठ गया। भग्गा ठीक है... उसने कठिनाई से कहा।

हाँ! मैंने उसे बताया कि मैं उसके बेटों से मिल चुका हूँ। मैं जानता हूँ कि सर से साया हटने का मतलब क्या होता है... उसने रुक-रुक कर किसी तरह कहा, ...एक महीने तक घर से नहीं निकल सका था मैं। एक महीने बाद तिलकनगर जाकर उन दुकानदारों से बात करने की हिम्मत जुटा पाया था। घातक हृदयाघात हुआ था पापा को। और... उन दुकानदारों ने जो कहा उस पर आज भी यकीन नहीं आता है। ...हमें क्या पता? हम समझे कोई पीकर पड़ा होगा... होश आएगा तो उठकर घर चला जाएगा।

जिंदगी भर सबके काम आने वाले मेरे पापा ने कभी किसी नशे को हाथ नहीं लगाया था।

संजय उवाच

संजय भारद्वाज
9890122603
writersanjay@gmail.com

दो ध्रुवों के बीच

इसी सप्ताह की घटना है। मैं दोपहिया वाहन से घर लौट रहा था। बाज़ार से दूर स्थित बैंक के पास एक वृद्ध सज्जन खड़े दिखाई दिए। जाने क्यों लगा कि लिफ्ट चाहते हैं पर कह नहीं पा रहे हैं। कुछ आगे जाकर मैं रुका और पूछा कि उन्हें कहाँ जाना है? उन्होंने बताया कि लम्बे समय से ऑटोरिक्शा की प्रतीक्षा कर रहे हैं पर कोई रिक्शा आया ही नहीं। फिर जानना चाहा कि क्या मैं उन्हें उनके गंतव्य तक छोड़ सकता हूँ? मैंने उन्हें बिठाया और उनके गंतव्य पर छोड़ दिया।

वे धीरे से उतरे। बोले,रिक्शा की प्रतीक्षा में खड़ा-खड़ा मैं बहत थक गया था। आपने बड़ी सेवा की। फिर एकाएक उन्होंने मेरे पैर छू लिए।

इस अप्रत्याशित व्यवहार से मैं संकोच से गड़ गया। कुछ कह पाता, उससे पूर्व अप्रत्याशित का कल्पनातीत अगला संस्करण भी सामने आ गया। उन्होंने जेब से रुपये दस का नोट निकाला और फिर बोले, इतना ही दे सकता हूँ। कृपया इस बूढ़े के पैसे से एक कप चाय पी लीजिएगा। अपमान और क्रोध से माथा भन्ना उठा। मैंने उन्हें हाथ जोड़े। नोट हाथ में लिए वे खड़े रहे और मैं वहाँ से एक तरह से रफूचक्कर हो गया।

गाड़ी की बढ़ी हुई गति के साथ विचारों को भी हवा मिली। अपने अपमान के भाव से आरम्भ हुआ विचार, वृद्ध के स्वाभिमान तक जा पहुँचा।

निष्कर्ष निकला कि वे स्वाभिमानी व्यक्ति थे। अनेक लोग ऐसे होते हैं जो किसीका एक नए पैसे का भी प्रत्यक्ष या परोक्ष ऋण अपने ऊपर नहीं चाहते। बैंक से उनके गंतव्य तक संभवत: शेयर रिक्शा दस रूपये ही लेता होगा। फलत: उन्होंने मुझे दस रुपये देने का प्रयास किया था।

अनुभव हुआ कि ध्रुवीय अंतर है आदमी और आदमी के बीच। एक ओर किसीका किसी भी तरह का ऋण अपने माथे पर ना रखनेवाला यह निर्धन है तो दूसरी ओर वित्तीय संस्थानों के हज़ारों करोड़ डकार जाने वाले कथित धनिक।

अनुभव कहता है कि संस्कार से विचार उद्भूत होता है। विचार, कृति का जनक होता है। कृति, व्यक्ति के चरित्र का निर्माण करती है।

ऋग्वेद का उद्घोष है-

''अग्निना रयिमश्नवत पोषमेव दिवेदिवे। यशसं वीरवत्तमम।''

संदेश स्पष्ट है कि हम धन अवश्य कमाएँ पर नीति-रीति से ही कमाएँ। अनीति से फटाफट धन की चाह, लोभ उत्पन्न करती है। लोभ अतृप्ति ढोने को अभिशप्त है।

अपनी कविता 'पुजारी' स्मरण हो आई-

मैं और वह
दोनों काग़ज़ के पुजारी,
मैं फटे-पुराने,
मैले-कुचले,
जैसे भी मिलते
काग़ज बीनता, संवारता,
करीने से रखता,
वह इंद्रधनुषों के पीछे भागता,
रंग-बिरंगे काग़ज़ों के ढेर सजाता,
दोनों ने अपनी-अपनी थाती
विधाता के आगे धर दी,
विधाता ने
उसके माथे पर अतृप्त अमीरी
और मेरे भाल पर
समृद्ध संतुष्टि लिख दी..!

संत ज्ञानेश्वर महाराज पसायदान में कहते हैं,

जो जे वांछील तो ते लाहो ।

हरेक अपना वांछित पा सकता है। तृप्ति या अतृप्ति, तोष या असंतोष, अनन्य मानव जीवन में अपना वांछित स्वयं तय करो।

अनुराग शर्मा

बाँधों को तोड़ दो

ये लोग होते कौन हैं आपको रोकने वाले? ऐसे कैसे बंद कर देंगे? उन्होंने कहा और आप सब ने मान लिया? चोर, डाकू, जेबकतरे सब तो खुलेआम घूमते रहते हैं इन्हीं सडकों पर... सारी दुश्मनी सिर्फ रिक्शा से निकाल रहे हैं? इसी रिक्शे की बदौलत शहर भर में हजारों गरीबों के घर चल रहे हैं। और उनका क्या जो अपने स्कूल, दुकान, और दफ्तर तक रिक्शा से जाते हैं? क्या वे सब लोग अब कार खरीद लेंगे?

छोटा बेटा रामसिंह बहुत गुस्से में था। गुस्से में तो हरिया खुद भी था परंतु वह अब इतना समझदार था कि अपने आँसू पीना जानता था। लेकिन बेचारे बच्चों को दुनिया की समझ ही कहाँ होती है? वे तो सोचते हैं कि संसार में सब कुछ न्याय के अनुसार हो। और फिर रामसिंह तो शुरू से ही ऐसा है। कहीं भी कुछ भी गलत हो रहा हो, उसे सहन नहीं होता है, बहुत गुस्सा आता है।

इस दुख की घड़ी में जब हरिया बड़ी मुश्किल से अपनी हताशा को छिपा रहा है, उसे अपने बेटे पर गर्व भी हो रहा है और प्यार भी आ रहा है। हरिया को लग रहा है कि बस दो चार साल रिक्शा चलाने की मोहलत और मिल गई होती तो इतना पैसा बचा लेता कि रामसिंह को स्कूल भेजना शुरू कर देता। अब तो लगता है कि अपना सब सामान रिक्शे पर लादकर किसी छोटे शहर का रास्ता पकड़ना पड़ेगा।

अगर सभी रिक्शेवाले एक हो जाएँ और यह गलत हुक्म मानने से मना कर दें तो सरकार चाहे कितनी भी जालिम हो उन्हें रोक नहीं पाएगी अभी चुप नहीं हुआ है रामसिंह।

उसे इस तरह गुस्से मे देखकर हरिया को तीस साल पुरानी बात याद आती है। हरिया यहाँ नहीं है, इतना बड़ा भी नहीं हुआ है। वह बिल्कुल अपने छोटे से राम के बराबर है, बल्कि और भी छोटा। गाँव की पुरानी झोंपड़ी मे खपड़ैल के बाहर अधनंगा खड़ा है। पिताजी मुँह लटकाए चले आ रहे हैं। वह हमेशा की तरह खुश होकर उनकी गोद में चढ़ने के लिए दौड़ता हुआ आगे बढ़ता है। उसे गोद में लेने के बजाए पिताजी खुद ही जमीन पर उकड़ूँ बैठ जाते हैं। पिताजी की आँख में आँसू है। माँ तो खाना बनाते समय रोज ही रोती है मगर पिताजी तो कभी नहीं रोते। तो आज क्यूँ रो रहे हैं। वह अपने नन्हें हाथों से उनके आँसू पोछकर पूछता है, क्या हुआ बाबा? रोते क्यों हो?

हमें अपना घर, यह गाँव छोड़कर जाना पड़ेगा बेटा हरिराम पिताजी ने बताया।

पूछने पर पता लगा था कि उनके गाँव और आसपास के सारे गाँव डुबोकर बाँध बनाया जाने वाला था।

नन्हा हरिया नहीं जानता था कि बाँध क्या होता है। लेकिन उस वय में भी उसे यह बात समझ आ गई थी कि यह उसके घर-द्वार, कोठार, नीम, शमी, खेत और गाँव को डुबोने की योजना है। कोई उसके घर को डुबोने वाला है, यह खयाल ही उसे गुस्सा दिलाने के लिए काफी था। फिर भी उसने पिताजी से कई सवाल पूछे।

ये लोग कौन हैं जो हमारा गाँव डुबो देंगे?

ये सरकार है बेटा, उनके ऊपर सारे देश की जिम्मेदारी है।

जिम्मेदार लोग हमें बेघर क्यों करेंगे? वे हत्यारे कैसे हो सकते हैं? हरिया ने पूछा। वे हत्यारे नहीं हैं, वे सरकार हैं। बाँध से पानी मिलेगा, सिंचाई होगी, बिजली बनेगी, खुशहाली आएगी। सरकार कहाँ रहती है? बड़े-बड़े शहरों में - कानपुर, कलकत्ता, दिल्ली।

बिजली कहाँ जलेगी? उन्हीं बड़े-बड़े शहरों में - कानपुर, कलकत्ता, दिल्ली। तो फिर बाँध के लिए कानपुर कलकत्ता दिल्ली को क्यों नहीं डुबाते हैं ये लोग? हमें ही क्यों जाना पड़ेगा घर छोड़कर?

ये त्याग है बेटा। अम्मा ने दधीचि और पन्ना धाय की कहानियाँ सुनाई थी, याद है? सरकार त्याग क्यों नहीं करती है? तब भी हमने ही किया था।

अब भी हम ही करें? पिताजी अवाक अपने हरिराम को देख रहे थे। ठीक वैसे ही जैसे आज वह अपने रामसिंह को देख रहा है। हरिया ने अपनी बाँह से आँख पोंछ ली। रामसिंह अभी भी गुस्से में बोलता जा रहा था। रधिया एक कोने में बैठकर खाने के डब्बों को पुरानी चादर में बाँध रही थी। ठीक वैसी ही दुबली और कमजोर जैसे अम्मा दिखती थी तीस साल पहले।

बोध कथा

चतुर सियार

सियार पहले ही शेर के पास जाकर बोले की बैल आपको मारने के लिए आ रहा है। बैल को गुस्से में आता देख शेर ने सियार की बात सच समझी और बैल पर हमला कर दिया। बैल ने भी शेर पर हमला किया और दोनों आपस में लड़ने लगे।

एक बार की बात है एक गांव में एक बैल रहता था। जिसको घूमना बहुत पसंद था। वह घूमता घूमता जंगल में जा पहुंचा और आते समय गांव का रास्ता भूल गया। वह चलता हुआ एक तालाब के पास पहुंचा। जहाँ पर उसने पानी पिया और वहाँ की हरी हरी घास खायी। जिसको खाकर वह बहुत खुश हुआ और ऊपर मुँह करके चिल्लाने लगा। उसी समय जंगल का राजा शेर तालाब की ओर पानी पिने जा रहा था। जब शेर ने बैल की भयानक आवाज़ सुनी तो उसने सोचा जरूर जंगल में कोई खतरनाक जानवर आ गया है। इसलिए शेर बिना पानी पिए ही अपनी गुफा की तरफ भागने लगा। शेर को इस तरह डर कर भागते हुए 2 सियार ने देख लिया।

वह शेर के मंत्री बनना चाहते थे। उनने सोचा यही सही समय है शेर का भरोसा जितने का। दोनों सियार शेर की गुफा में गए और बोले हमने आपको डर कर गुफा की ओर आते हुए देखा था। आप जिस आवाज़ से डर रहे थे वह एक बैल की थी। यदि आप चाहे तो हम उसको लेकर आपके पास आ सकते है। शेर की आज्ञा से दोनों बैल को अपने साथ लेकर आ गए और शेर से मिलाया। कुछ समय बाद शेर और बैल बहुत ही अच्छे मित्र बन गए। शेर ने बैल को अपना सलाहकार रख लिया। यह बात जानकर दोनों सियार उनकी दोस्ती से जलने लगे क्योकि उनने जो मंत्री बनने का सोचा था वह भी नहीं हुआ। दोनों सियार ने तरकीब निकाली और शेर के पास गए। वह शेर से बोले बैल आपसे केवल मित्रता का दिखावा करता है। लेकिन हमने उसके मुँह से सुना है वह आपको अपने दोनों बड़े सींगो से मारकर जंगल का राजा बनना चाहता है। पहले तो शेर ने विश्वास नहीं किया लेकिन उसको ऐसा लगने लगा। दोनों सियार इसके बाद बैल के पास गए। वह बैल से बोले शेर तुमसे केवल मित्रता का दिखावा करता है। मौका मिलने पर वह तुमको मार कर खा जायेगा। बैल को यह जानकर बहुत गुस्सा आया और वह शेर से मिलने के लिए जाने लगा। सियार पहले ही शेर के पास जाकर बोले की बैल आपको मारने के लिए आ रहा है। बैल को गुस्से में आता देख शेर ने सियार की बात सच समझी और बैल पर हमला कर दिया। बैल ने भी शेर पर हमला किया और दोनों आपस में लड़ने लगे। अंत में शेर ने बैल को मार दिया और दोनों सियारों को अपना मंत्री बना लिया।

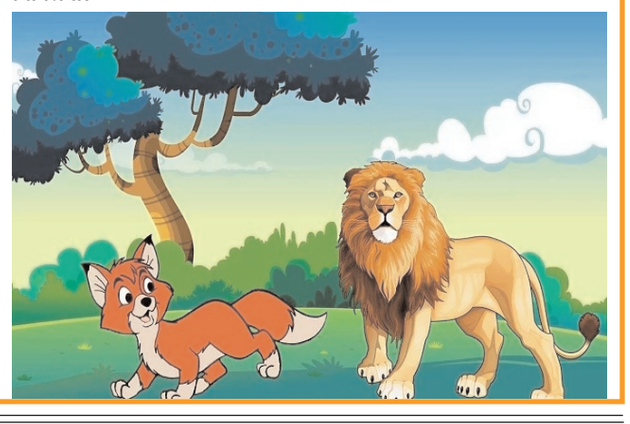

वीर गाथा

फर्ज की राह में कुर्बानी देकर 'अमर' हो गए अमरदीप

सेकंड लेफ्टिनेंट अमरदीप सिंह बेदी का जन्म 25 जून, 1966 को उत्तर प्रदेश के बरेली में हुआ था। वे भारतीय सेना के मद्रास इंजीनियर ग्रुप (एमईजी) के अधिकारी थे, जिसे मद्रास सैपर्स भी कहा जाता है। यह सेना की महत्त्वपूर्ण लड़ाकू सहायता शाखा है, जिसने देशसेवा के लिए बड़े बलिदान दिए हैं।

जनवरी 1989 में अमरदीप शांति रक्षा के तहत श्रीलंका में तैनात थे। वहां भारतीय सैनिक खतरनाक उग्रवादी समूह लिट्टे का संहार कर रहे थे। सेना के अभियानों से लिट्टे को भारी नुकसान हो रहा था।

भारतीय सैनिक ऐसे इलाकों में लड़ रहे थे, जहां घने जंगल, नदियां और अत्यंत चुनौतीपूर्ण भौगोलिक परिस्थितियां थीं। जनवरी 1989 तक लिट्टे के कई उग्रवादियों का खात्मा किया जा चुका था, लेकिन युद्ध समाप्त नहीं हुआ था।

18 जनवरी को सेना को अपने खुफिया सूत्रों से एक सूचना मिली, जिसके बाद अमरदीप और साथी जवानों को जिम्मेदारी दी गई कि वे एक संदिग्ध इलाके में छिपे उग्रवादियों का खात्मा करें। अमरदीप को जंगल में तलाशी के दौरान कुछ उग्रवादी नजर आए। वे तेजी से उनकी ओर बढ़े। उन्होंने भाग रहे उग्रवादियों में से एक को मार गिराया। इसके अलावा तीन उग्रवादी या तो मारे गए या गंभीर रूप से घायल हो गए थे।

जब अमरदीप एक संकरे जलमार्ग से आगे बढ़ रहे थे तो दर्जनभर उग्रवादियों ने उन पर हमला किया। इसके बाद भारी गोलीबारी में उग्रवादियों को नुकसान हुआ, लेकिन अमरदीप शहीद हो गए थे।

महत्त्वपूर्ण

Published by Bhupendra Kumar on behalf of New Media Company, Arihant Plaza, 2nd Floor, 84-85, Wall Tax Road, Chennai-600 003 and printed by R. Kannan Adityan at Deviyin Kanmani Achagam, 246, Anna Salai, Thousand Lights, Chennai-600 006. Editor : Bhupendra Kumar (Responsible for selection of news under PRB Act.). Group Editor - Shreekant Parashar. Reproduction of any matter from this newspaper in whole or in part or any suchmanner without prior written permission from the publisher is strictly prohibited and punishable by law.**Regn No.RNI No. : TNHIN / 2013 / 52520**

पाठकों से अनुरोध है कि इस प्रकाशन में प्रकाशित किए जाने वाले किसी भी तरह के विज्ञापन (वैवाहिक, वर्गीकृत, टेंड़र एवं सजावटी इत्यादि) पर कोई भी कार्यवाही, प्रतिबद्धता या धनराशि का व्यय करने से पूर्व इन विज्ञापनों के बारे में समस्त जानकारी वह स्वयं प्राप्त कर लें। दक्षिण भारत राष्ट्रमत समूह उत्पादों की गुणवत्ता तथा सेवाओं के लिए विज्ञापनदाताओं द्वारा किए जा रहे किसी प्रकार के दावों के लिए जिम्मेदार नहीं है। अगर विज्ञापनदाता विज्ञापन में किया जा रहा दावा पूरा नहीं करता है तो दक्षिण भारत राष्ट्रमत समूह के संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक या मालिकान को पाठक किसी भी रूप में उत्तरदाई नहीं बना सकता।- **दक्षिण भारत राष्ट्रमत**

आपातकाल को लेकर बिरला की टिप्पणी उचित नहीं थी: शरद पवार

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

कोल्हापुर/भाषा। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (शरदचंद्र पवार) के अध्यक्ष शरद पवार ने शनिवार को कहा कि लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला द्वारा अपने संबोधन में

आपातकाल का जिक्र करना उचित नहीं था और यह उनके पद की गरिमा के अनुरूप नहीं था।

पवार ने यहां संवाददाताओं से कहा कि उनके भतीजे एवं महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री अजित पवार द्वारा शुक्रवार को पेश किए गए बजट में घोषित की गई रियायतें राज्य विधानसभा चुनाव से पहले यह दिखाने का एक प्रयास मात्र है कि वे कुछ बड़ा करने जा रहे हैं।

लोकसभा अध्यक्ष के रूप में निर्वाचित होने के तुरंत बाद बिरला ने आपातकाल लगाये जाने की निंदा करते हुए बुधवार को एक प्रस्ताव पढ़ा था। उन्होंने आपातकाल लगाये जाने को तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी द्वारा संविधान पर हमला बताया था।

पवार ने इसका जिक्र करते हुए कहा, लोकसभा अध्यक्ष के अपने संबोधन में आपातकाल का जिक्र करना, इस पद की गरिमा के अनुरूप नहीं था। आपातकाल को 50 साल हो चुके हैं और इंदिरा गांधी अब जीवित नहीं हैं, तो फिर अध्यक्ष अब इस मुद्दे को क्यों उठा रहे हैं? उन्होंने कहा, क्या राजनीतिक बयान देना अध्यक्ष का काम है? हमें लगता है कि उनका बयान उचित नहीं था। राष्ट्रपति के अभिभाषण में भी इस मुद्दे का संक्षिप्त उल्लेख था। यह भी जरूरी नहीं था।

अनुसंधान विशेषज्ञों ने संरा से कहा

यूक्रेन में पाए गए मिसाइल के अवशेष उत्तर कोरिया के हैं

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

संयुक्त राष्ट्र।वर्ष 2018 से यूक्रेन पर हमलों में इस्तेमाल किए गए हथियारों का पता लगाने वाले एक शोध संगठन के प्रमुख ने शुक्रवार को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद को बताया कि यह अकाट्य रूप से स्थापित हो चुका है कि यूक्रेन में पाए गए बैलिस्टिक मिसाइल के अवशेष उत्तर कोरिया के हैं।

बैठक में अमेरिका और उसके सहयोगी पश्चिमी देशों ने रूस और उत्तरी कोरिया के साथ बहस करते हुए कहा कि 'डेमोक्रेटिक पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ कोरिया' (डीपीआरके) यानी उत्तर कोरिया से हथियारों के निर्यात को लेकर लगाए गए संयुक्त राष्ट्र के प्रतिबंधों का दोनों देशों ने उल्लंघन किया है।

रूस ने आरोपों को निराधार बताया और उत्तरी कोरिया ने ''किसी के कथित 'हथियार हस्तांतरण' पर चर्चा करने को अत्यंत निंदनीय कृत्य करार देते हुए बैठक को खारिज किया।

'कॉन्फ्लिक्ट आर्ममेंट रिसर्च' के कार्यकारी निदेशक जोना लेफ ने परिषद को दो जनवरी को यूक्रेन के दूसरे सबसे बड़े शहर खार्किव पर हमला करने वाली मिसाइल के अवशेषों के विस्तृत विश्लेषण का ब्योरा दिया। उन्होंने कहा कि संगठन ने मिसाइल के रॉकेट मोटर, अन्य उपकरण और आठ देशों और क्षेत्रों की 26 कंपनियों द्वारा निर्मित लगभग 300 घटकों का दस्तावेजीकरण कर पता लगाया है कि मिसाइल या तो केएन-23 या केएन-24 हैं, जिनका निर्माण उत्तरी कोरिया में किया गया।

'अश्वेतों' और 'लातिन अमेरिकियों' की नौकरियां छीन रहे हैं प्रवासी: ट्रंप

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

वाशिंगटन। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने मौजूदा राष्ट्रपति जो बाइडन के साथ बहस और शुक्रवार को एक रैली के दौरान दावा किया कि प्रवासी अमेरिका में अश्वेतों और लातिन अमेरिकियों की नौकरियां छीन रहे हैं।

ट्रंप के इस बयान की उनके आलोचकों ने कड़ी निंदा की और कहा कि वोट बैंक का दायरा बढ़ाने की उनकी यह नस्लवादी और अपमानजनक कोशिश है।

अमेरिका में राष्ट्रपति पद के लिए होने वाले चुनाव की प्रक्रिया के तहत ट्रंप और बाइडन के बीच बृहस्पतिवार को करीब 90 मिनट तक जोरदार बहस हुई थी।

ट्रंप ने कोई सबूत पेश किए बिना कहा कि डेमोक्रेटिक पार्टी के नेता चाहते हैं कि मतदाता के रूप में प्रवासी अमेरिकियों की जगह ले लें। उन्होंने 'सीएनएन' पर प्रसारित बहस में कहा, ''सच्चाई यह है कि वह (बाइडन) अश्वेत लोगों पर सबसे बड़ा प्रहार उन लाखों लोगों के जरिए कर रहे हैं जिन्हें उन्होंने सीमा पार से आने की अनुमति दी है। वे अब अश्वेतों की नौकरियां ले रहे हैं। वे लातिन अमेरिकियों की नौकरियां ले रहे हैं। आपको अभी यह समझ नहीं हा रहा लेकिन आप हमारे इतिहास की सबसे खराब चीज होती देखेंगे।''

ट्रंप और उनके सहयोगियों का मानना है कि इस तरह की बयानबाजी बाइडन के कामकाज से असंतुष्ट अश्वेतों और लातिन अमेरिकी समुदाय तक पूर्व राष्ट्रपति की पहुंच बढ़ाएगी। ट्रंप ने शुक्रवार को वर्जीनिया में एक रैली के दौरान फिर से ये टिप्पणियां कीं।

डेमोक्रेटिक पार्टी और अश्वेत नेताओं ने ट्रंप के इस बयान की निंदा की। 'नेशनल असोसियेशन फॉर द एडवांसमेंट ऑफ कलर्ड पीपल' के अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी डेरिक जॉनसन ने कहा, ''अश्वेतों के लिए नौकरी जैसी कोई चीज नहीं होती। यह गलत जानकारी अश्वेत प्रतिभा की सर्वव्यापकता को नकारती है। हम चिकित्सक, वकील, शिक्षक, पुलिस अधिकारी और अग्निशमन कर्मी हैं। यह सूची बहुत लंबी है।'' उन्होंने कहा, ''यह चिंताजनक है कि राष्ट्रपति पद का उम्मीदवार ऐसा भेद पैदा करने की कोशिश कर रहा है जो मौजूद नहीं है, हालांकि ट्रंप का इस तरह की विभाजनकारी बात करना आश्चर्यजनक नहीं है।''

'हम बलपूर्वक यथास्थिति बदलने की एकतरफा कार्रवाई का विरोध करते हैं'

नई दिल्ली/एजेन्सी । भारत ने शुक्रवार को कहा कि वह दक्षिण चीन सागर में बलपूर्वक यथास्थिति को बदलने की एकतरफा कार्रवाई का विरोध करता है। भारत ने यह बयान क्षेत्र में फिलीपीन के समुद्री अभियानों के खिलाफ चीन के बढ़ते कदमों को लेकर उपजी चिंताओं के बीच दिया है। दक्षिण चीन सागर में कुछ दिन पहले चीन और फिलीपीन के समुद्री सुरक्षाकर्मियों के बीच हिंसक झड़प की घटना के बाद दोनों देशों के बीच तनाव बढ़ गया है। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने कहा, ''हमने हमेशा अंतरराष्ट्रीय कानून के पालन, नियम-आधारित व्यवस्था के सम्मान और शांतिपूर्ण तरीके से विवादों के समाधान पर जोर दिया है।'' उन्होंने कहा कि भारत का यह भी मानना है कि ऐसी कोई घटना या रुख नहीं होना चाहिए जो क्षेत्र को अस्थिर करे।

जायसवाल ने भारत के रुख को भी रेखांकित किया कि विवादों को शांतिपूर्ण ढंग से हल किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा, ''हम अस्थिर करने वाली या एकतरफा कार्रवाइयों का विरोध करते हैं जो बलपूर्वक या जबरदस्ती यथास्थिति को बदलने की कोशिश करती है। हम विवादों के शांतिपूर्ण समाधान की आवश्यकता को रेखांकित करते हैं।''

हाइड्रोकार्बन के विशाल स्रोत दक्षिण चीन सागर पर संप्रभुता के चीन के व्यापक दावों को लेकर वैश्विक चिंताएं बढ़ रही हैं। वियतनाम, फिलीपीन और ब्रुनेई सहित क्षेत्र के कई देश भी इस पर अपना दावा करते हैं।

लग्जरी गाड़ी छोड़ ऑटो रिक्शा में बारिश का लुत्फ उठाने निकले अनुपम खेर

मुंबई/एजेन्सी

बरसात का मौसम शुरू हो गया है। गर्मी से राहत मिलने पर हर कोई बारिश के मजे ले रहा है। बॉलीवुड स्टार अनुपम खेर भी अपनी लग्जरी कार छोड़ बारिश का लुत्फ उठाने ऑटो से निकल पड़े और इसका वीडियो शेयर किया। अनुपम ने शनिवार को इंस्टाग्राम स्टोरीज पर एक वीडियो शेयर किया, जिसमें वह मुंबई की सड़कों पर ऑटो रिक्शा से घूमते हुए नजर आ रहे हैं। एक्टर ने सेल्फी मोड में जाने से पहले बारिश के बीच आस-पास का नजारा दिखाया और गाना शुरू किया, ''बारिश, बारिश''।

वर्कफ्रंट की बात करें तो, अनुपम 22 साल बाद अपने अपकमिंग प्रोजेक्ट 'तन्वी द ग्रेट' के साथ निर्देशन में वापसी करेंगे। इससे पहले उन्होंने 2002 में अनिल कपूर, फरदीन खान और अभिषेक बच्चन स्टारर फिल्म 'ओम जय जगदीश' का निर्देशन किया था। अपने 69वें जन्मदिन पर, एक्टर ने 'तन्वी द ग्रेट' के साथ निर्देशन की कुर्सी पर वापसी की घोषणा की थी। ज्यादा कुछ बताए बिना, अनुपम ने कहा कि अपकमिंग फिल्म 'तन्वी द ग्रेट' जुनून, साहस और मासूमियत की एक म्यूजिकल कहानी है।

अनुपम ने खुलासा किया कि इस प्रोजेक्ट्स से कई नामी हस्तियां जुड़ी हुई हैं। ऑस्कर विजेता संगीत निर्देशक एम.एम. कीरवानी फिल्म में म्यूजिक देंगे, जो ब्लॉकबस्टर 'आरआरआर' में अपने काम के लिए जाने जाते हैं। वहीं, गीतकार कौसर मुनीर इस फिल्म में शामिल हो गई हैं, वह 'इश्कजादे', 'एक था टाइगर', 'बजरंगी भाईजान' जैसी फिल्मों के लिए जानी जाती हैं। अनुपम खेर ने कौसर मुनीर को टीम में शामिल करने पर खुशी जाहिर करते हुए एमएम कीरवानी और कौसर के साथ तस्वीर शेयर की और कैप्शन में लिखा, घोषणा: मेरे निर्देशन में बनी फिल्म 'तन्वी द ग्रेट' की बेहद प्रतिभाशाली गीतकार कौसर मुनीर को पेश करते हुए खुशी और सम्मान का अनुभव हो रहा है। मैं भाग्यशाली हूं कि आप हमारे उल्लेखनीय तकनीशियनों की टीम में हैं। जय हो। राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता कोरियोग्राफर कृति महेश और 'जवान' के एक्शन निर्देशक सुनील रोड्रिग्स भी अनुपम खेर की 'तन्वी द ग्रेट' क्रू का हिस्सा हैं। 'तन्वी द ग्रेट' का निर्माण अनुपम खेर स्टूडियो द्वारा किया गया है।

नागार्जुन ने देखी 'कल्कि 2898 एडी', अमिताभ बच्चन को बताया 'ओरिजनल मास हीरो'

मुंबई/एजेन्सी

इस साल की सबसे बड़ी फिल्म कहे जाने वाली 'कल्कि 2898 एडी' सिनेमाघरों में रिलीज हो चुकी हैं। लोग फिल्म को काफी पसंद कर रहे हैं। इस फिल्म की तारीफ नागार्जुन अक्किनेनी ने भी की। उन्होंने अमिताभ बच्चन को 'ओरिजनल मास हीरो' बताया। फिल्म में अमिताभ बच्चन ने अश्वत्थामा की भूमिका निभाई है, जो भगवान विष्णु के दसवें अवतार 'कल्कि' की प्रतीक्षा कर रहे हैं। इस फिल्म को नाग अश्विन ने डायरेक्ट किया है। नागार्जुन ने एक्स पोस्ट पर फिल्म निर्माता नाग अश्विन की भी तारीफ की। उन्होंने लिखा, ''सुपर डुपर 'कल्कि 2898 एडी' की टीम को बधाई!! अश्विन, आप हमें एक अलग दुनिया में ले गए। आपने कल्पना को पौराणिक कथाओं और इतिहास के साथ बहुत सहजता से जोड़ा है!!

इसके बाद नागार्जुन ने अमिताभ की तारीफ करते हुए लिखा, ''अमित जी, ओरिजनल मास हीरो... सर, आपने अपने परफॉर्मेंस से आग लगा दी है।'' फिल्म में प्रभास 'भैरवा' के किरदार में हैं, जो कहानी में सरप्राइज ट्विस्ट लेकर आते हैं। दीपिका पादुकोण 'सुमति' की भूमिका में नजर आईं, जो मजबूत महिला हैं और कोख में पल रहे बच्चे के लिए संघर्ष करती हैं। वहीं 'कॉम्प्लेक्स' नाम के एम्पायर के शासक सुप्रीम यास्किन के खलनायक किरदार में कमल हासन हैं। नागार्जुन ने सुपरस्टार कमल हासन, प्रभास और दीपिका की भी जमकर प्रशंसा की। उन्होंने कहा, ''कमलजी को सीक्वल में देखने के लिए इंतजार नहीं कर सकता... उनसे बहुत कुछ सीखा है! प्रभास आपने अपने दमदार एक्टिंग से एक बार फिर फैंस को दीवाना बना दिया है!! उन्होंने आगे कहा, ''दीपिका जी, आप मां के किरदार में अविश्वसनीय लग रही हैं!! और बाकी टीम। अश्विनी दत्त गारू, स्वीटी और स्वप्ना, भगवान आप पर अपना आशीर्वाद बनाए रखें। भारतीय सिनेमा ने फिर से यह कर दिखाया!! फिल्म में कई स्टार स्पेशल अपीयरेंस में हैं, इनमें डायरेक्टर राम गोपाल वर्मा, फिल्म मेकर एस.एस. राजामौली, एक्टर विजय देवरकोंडा, दुलकर सलमान और एक्ट्रेस मृणाल ठाकुर शामिल हैं।

'मिर्जापुर 3' से पहले श्वेता त्रिपाठी शर्मा ने काशी में बाबा विश्वनाथ के किए दर्शन

मुंबई/एजेन्सी

सुपरहिट स्ट्रीमिंग सीरीज 'मिर्जापुर' के तीसरे सीजन को लेकर ओटीटी फैंस में काफी क्रेज है। इसमें एक्ट्रेस श्वेता त्रिपाठी शर्मा 'गोलू गुप्ता' के किरदार में नजर आएंगी। शो की रिलीज से पहले श्वेता ने शनिवार को वाराणसी के काशी विश्वनाथ मंदिर में भगवान शिव का आशीर्वाद लिया। एक्ट्रेस ने आईएएनएस से बात करते हुए कहा, वाराणसी शहर मुझे हर साल बुलाता है और मैं हर बार इस शहर में आकर खुद को धन्य महसूस करती हूं। मैं पहली बार 'मसान' के प्रमोशन के दौरान यहां आयी थी। मुझे लगता है कि काशी ने मुझे चुना है, इसलिए मैं पिछले कुछ वर्षों से हर साल यहां आती हूं। मैं पिछले साल अपने ट्रेनर त्रिदेव पांडे की शादी में शामिल होने के लिए यहां आयी थी, इससे पहले मैं 'मिर्जापुर' और अपने दूसरे शो जैसे 'एस्केप लाइव' और 'कालकूट' की शूटिंग के लिए यहां आया था।'' श्वेता ने कहा, मैंने काशी में भगवान से आशीर्वाद लिया, कचौड़ी खाई और कसरत भी की। मैंने गंगा आरती देखी और 5 जुलाई को रिलीज होने वाली 'मिर्जापुर' की सफलता के लिए प्रार्थना की।'' 'मिर्जापुर 3' अमेजन प्राइम पर 5 जुलाई को स्ट्रीम होगी। इसके एक दिन 6 जुलाई को एक्ट्रेस अपना बर्थडे सेलिब्रेट करेंगी। श्वेता ने कहा: शो का तीसरा सीजन मेरे लिए इस मायने में बहुत खास है कि लोग मेरे बर्थडे पर मेरा काम देखेंगे। मिर्जापुर में गोलू गुप्ता की भूमिका में श्वेता लेडी डॉन के तौर पर सामने आएंगी। वह कुछ बड़ा करने का प्लान बना रही हैं। श्वेता ने आगे कहा, यहां के लोग मुझे 'गोलू दीदी' कहकर बुलाते हैं, जो मुझे बहुत प्यारा लगता है। दूसरे नाम जो मैं सुनती हूं, वे हैं 'गोलू देवी' और 'गोलू डॉन'। '

'बैड न्यूज' का ट्रेलर रिलीज

मुंबई/एजेन्सी

तृप्ति डिमरी, विक्की कौशल और एम्मी विर्क स्टारर फिल्म बैड न्यूज का ट्रेलर रिलीज हो गया है। धर्मा प्रोडक्शन के बैनर तले बनी वर्ष 2019 में प्रदर्शित फिल्म 'गुड न्यूज' में अक्षय कुमार, करीना कपूर, दिलजीत दोसांझ और कियारा आडवाणी की अहम भूमिका निभायी थी। अब गुड न्यूज का सीक्वल 'बैड न्यूज' आ रहा है। इस फिल्म में विक्की कौशल, एम्मी विर्क और तृप्ति डिमरी हैं।

'बैड न्यूज' का ट्रेलर रिलीज हो गया है। आनंद तिवारी ने बैड न्यूज को निर्देशित किया है।बैड न्यूज के ट्रेलर की शुरुआत प्रेग्नेंट तृप्ति डिमरी के कंफ्यूजिंग फेस से होती है, जिसे यह नहीं पता होता कि उनके बच्चे का पिता कौन है. इसके बाद बैड न्यूज के ट्रेलर में विक्की कौशल और एम्मी विर्क की एंट्री होती है, जो तृप्ति डिमरी के बच्चे के दोनों पिता होते हैं। इसके बाद ट्रेलर में दिखाया गया है कि कैसे दोनों अच्छा पिता बनने की कोशिश में लगे होते हैं। बैड न्यूज 19 जुलाई को सिनेमाघरों में रिलीज होगी।

मिंत्रा होम की ब्रांड एंबेसडर बनीं मसाबा गुप्ता

नई दिल्ली/एजेन्सी

फैशन डिजाइनर और एक्ट्रेस मसाबा गुप्ता एक बार फिर सुर्खियों में हैं। इंडियन फैशन ई-कॉमर्स कंपनी मिंत्रा ने उन्हें 'मिंत्रा होम' का ब्रांड एंबेसडर बनाया है। बतौर ब्रांड एंबेसडर वह प्लेटफॉर्म को अपने क्रिएटिव विजन से आगे ले जाएंगी। ट्रेंड-फर्स्ट कस्टमर्स की उम्मीदों के मुताबिक घर का चयन करेंगी, जो उनके पर्सनालिटी को दर्शाते हों। इस सहयोग के हिस्से के रूप में, वह 'क्यूरेटेड बाय मसाबा' कैंपेन में भी दिखाई देंगी, जो मिंत्रा के प्रीमियम होम सेलेक्शन को सामने लाता है। मसाबा ने कहा, घर वह जगह है जहां हम खुद को खुलकर एक्सप्रेस करते हैं। मिंत्रा की होम कैटेगरी के लिए ब्रांड एंबेसडर बनना घर की सजावट को सेल्फ-एक्सप्रेशन में बदलने जैसा है। मेरे लिए, यह सहयोग घर बनाने के सफर को खूबसूरत एस्थेटिक के साथ जोड़ने का एक मौका है।''

मसाबा गुप्ता काफी क्रिएटिव हैं। उन्होंने फैशन और ब्यूटी के क्षेत्र में काफी नाम कमाया है। अब, वह मिंत्रा होम के जरिए नए-नए आइडिया और क्रिएटिविटी लोगों के साथ शेयर करेंगी। मिंत्रा होम के पोर्टफोलियो में एमएंडएस होम्स, एचएंडएम होम्स, इंडिया सर्कस, माई ट्राइडेंट, अर्बन स्पेस, एलिमेंट्री, डी'डेकोर और नेस्टासिया समेत प्रमुख ब्रांड्स के बढ़िया होम फर्निशिंग, ट्रेंडी आर्ट और डेकोर पीस, लैंप एंड लाइटिंग, किचन एंड डाइनिंग, बाथ और बेड लिनेन और अप्लायंसेज शामिल हैं। हाल ही में होम कैटेगरी पर अपना फोकस करने के बाद से मिंत्रा ने अपनी पेशकशों में बढ़ोतरी की है, जिसमें 1,500 से ज्यादा घरेलू और ग्लोबल ब्रांड्स की 4 लाख से ज्यादा स्टाइल की एक लिस्ट है। पिछले कुछ सालों में देखा गया है कि लोग घर पर ज्यादा समय बिता रहे हैं। ऐसे में हाइब्रिड वर्क और वर्क फ्रॉम होम में काफी बढ़ोतरी हुई है, जिसके चलते उपभोक्ता अपने घर के सामान और सजावट में ज्यादा निवेश कर रहे हैं। किचन, वॉल क्लॉक और सर्ववेयर जैसी कुछ सब-कैटेगरी की डिमांड में साल-दर-साल 100 प्रतिशत से ज्यादा की वृद्धि दर्ज की जा रही है।

मिंत्रा के सीएमओ सुंदर बालासुब्रमण्यन ने कहा, ''हम मसाबा गुप्ता का मिंत्रा होम के ब्रांड एंबेसडर के रूप में स्वागत करते हैं। घर हर किसी की लाइफस्टाइल का अहम हिस्सा है और इसलिए कैटेगरी का विस्तार फैशन और लाइफस्टाइल को लोकतांत्रिक बनाने की मिंत्रा की प्रतिबद्धता में अच्छी तरह से फिट बैठता है। मसाबा के टैलेंट का बोलबाला विश्व स्तर पर है, और हम अपने कस्टमर्स को प्रेरित करने के लिए उनके क्यूरेटेड कलेक्शन, थीम और लुक के जरिए एस्थेटिक की उनकी गहरी समझ को पेश करने के लिए रोमांचित हैं।'' फैशन की तरह, घर की सजावट को लेकर हर किसी की अलग-अलग पसंद है। डिजाइन और एस्थेटिक पर फोकस्ड मिंत्रा पर क्यूरेटेड कलेक्शन का मकसद मूड-बूस्टिंग, थीम-बेस्ड डेकोर इंस्पिरेशन की पेशकश कर घरों को स्वर्ग में बदलना है, जो प्रीमियम कैटलॉग इमेजरी में भी शामिल है। उदाहरण के लिए, 'कोजी बेडरूम' चयन में सिरेमिक डिफ्यूज़र, मिनिमलिस्ट लैंप और न्यूट्रल-शेडेड फर्नीचर शामिल हैं। इसी तरह, 'लवली लिविंग रूम' में ट्रॉपिकल कुशन, सिरेमिक प्लांटर्स, टेक्सचर्ड ओटोमैन और बुने हुए हैंगिंग शामिल हैं।

'क्यूरेटेड बाय मसाबा' कैंपेन में 'मिंत्रा होम' सलेक्शन को पेश किया जाएगा। यह टॉप डिजाइन एस्थेटिक के मूल प्रस्ताव पर जोर देता है, जिससे कस्टमर्स अपने घरों को बेहतर बनाने के लिए प्रोडक्ट और ब्रांड्स को सहजता से ढूंढ सकते हैं। टोस्टर इंडिया की चीफ क्रिएटिव ऑफिसर इरा गुप्ता ने कहा, हमें लगा कि 'होम डेकोर' कैटेगरी को अपडेट करने की जरूरत है और जब यह मिंत्रा के लिए है, तो इसे फैशनेबल भी होना चाहिए। मसाबा के साथ हमने कुछ ऐड फिल्में बनाई हैं, जिसमें मिंत्रा होम के प्रोडक्ट्स के बारे में जानकारी दी गई है।'' ऐड फिल्म में मसाबा गुप्ता के साथ-साथ पॉपुलर कंटेंट क्रिएटर कुशा कपिला भी हैं, जो क्यूरेटेड होम, लिविंग लुक और प्रोडक्ट्स को प्रदर्शित करती हैं। उसके बाद, वह मेहमानों के सामने इस तरह से बात करती हैं, जिससे संकेत मिलते हैं कि ये एक्सक्लूसिव क्राफ्ट दुनिया के अलग-अलग जगहों से मगाएं गए हैं। इस दौरान मसाबा की एंट्री होती है, जो जानती है कि कपिला जिन क्राफ्ट के बारे बता रही हैं, वे मिंत्रा के होम सलेक्शन से हैं। इस बीच मसाबा कपिला से एक फूलदान के बारे में पूछती हैं, जिस पर कपिला को हार कर बताना पड़ता है कि ये उसने मिंत्रा से खरीदी है। इसके बाद वह बीच में ही वहां से चली जाती हैं। इस तरह यह कैंपेन मिंत्रा द्वारा चुने गए, यूनीक और ट्रेंडी होम सेलेक्शन को सामने लाता है, जो घर के हर कोने को रिफ्रेश करता है।

दक्षिण भारत राष्ट्रमत

www.dakshinbharat.com
epaper.dakshinbharat.com

चेन्नई | रविवार | 30-06-2024 /dakshinbharat /dakshinbharat DAKSHIN BHARAT RASHTRAMAT HINDI DAILY

RNI No. : TNHIN/2013/52520
Regn No. : TN/CCN/613/2014-2016
posted at Patrika Channel,
Egmore RMS, Chennai-8

जीवन अनिश्चितताओं से भरा लंबा यात्रा-पथ है। यहां किसी के जीवन में कुछ भी घटित हो सकता है। हमारे मन का सोचा हुआ सब सार्थक होगा, यह मानकर चलना बहुत बड़ी भूल है। इसीलिए अच्छे अवसरों का लाभ उठाने का भरपूर प्रयत्न करना चाहिये। जीवन की सफलता का यही मूलमंत्र है। अक्सर देखा जाता है कि लक्ष्मीदेवी तिलक करने द्वार पर आयी और मनुष्य मुंह धोने के लिए चला गया। जब वह वापस लौटा, तब तक लक्ष्मी विदा हो चुकी थी। नीति और धर्मशास्त्रों ने इसे निपट मूर्खता कहा है।

एससीआई चेन्नई द्वारा हिन्दी कार्यशाला का आयोजन

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

चेन्नई। भारतीय नौवहन निगम लिमिटेड (दि शिपिंग कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लि.) के क्षेत्रीय कायार्लय में 28 जून को एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। क्षेत्री उपमहाप्रबंधक अलगुवेल ने कार्यशाला का उद्घाटन किया। उन्होंने कर्मचारियों से राजभाषा कार्यान्वयन के लिए क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा किये जा रहे सभी सार्थक प्रयासों से अवगत कराया। इस अवसर पर उन्होंने हिन्दी प्रशिक्षण कार्यशाला और हिन्दी कार्यान्वयन से जुडी सभी गतिविधियों में अधिक सक्रियता से भाग लेने तथा हिन्दी के कार्यान्वयन में अपना यथासंभव योगदान देने का अनुरोध किया। हिन्दी में कामकाज को सुगम बनाने के उद्देश्य से सभी कर्मचारियों सहायक साहित्य का वितरण किया गया। इस अवसर पर सेवानिवृत्त क्षेत्रीय प्रबंधक ईश्वर करुण मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित थे। उन्होंने राजभाषा की महत्ता एवं हिन्दी पत्राचार को बढ़ाने के लिए विविध उपायों पर चर्चा की। संचालन विभागाध्यक्ष एवं उपमहाप्रबंधक (प्रशासन व कार्मिक/नौकार्मिक/जनसंपर्क/ राजभाषा) एम पी सिंह द्वारा किया किया और धन्यवाद ज्ञापित किया।

कमान दक्षिण भारत राष्ट्रमत

चेन्नई के श्री माहेश्वरी सत्संग समिति के अध्यक्ष पद की कमान अब वल्लभदास कंधारी ने संभाली है। समिति के अध्यक्ष जीवनसिंह मोहता के स्वर्गवास के उपरांत उपाध्यक्ष वल्लभदास कंधारी ने रिक्त स्थान को पूर्ण करने के लिए सहमति के उपरांत सर्वसम्मति से उन्हें समिति का अध्यक्ष चुना गया।

कैंसर जाँच शिविर में 51 महिलाओं ने कराई जांच

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

चेन्नई। तेरापंथ महिला मंडल, चेन्नई के तत्वावधान में राजस्थानी एसोसिएशन (रजत) की महिला विंग 'गणगौर' एवं श्री जैन मेडिकल रिलीफ सोसाइटी के सहयोग से कैंसर केयर केम्प का आयोजन 29 जून को साहुकारपेट के तेरापंथ सभा भवन में किया गया। कैम्प का शुभारम्भ नमस्कार महामंत्र के पश्चात महिला मण्डल की सदस्याओं द्वारा प्रेरणा गीत एवं गणगौर प्रार्थना संगीत का संगान हुआ। महिला मंडल की राष्ट्रीय कार्यसमिति सदस्य माला कातरेला और दीपा पारख ने गत पचास वर्षीय इतिहास के साथ संस्था द्वारा संचालित आध्यात्मिक, सामाजिक गतिविधियों का उल्लेख करते हुए महिला स्वास्थ्य जागरूकता के अन्तर्गत इस कार्य के लिए स्थानीय महिला मण्डल, गणगौर और सहयोगी संस्थाओं को साधुवाद सम्प्रेषित किया। महिला मण्डल अध्यक्ष लता पारख ने स्वागत, अभिनंदन करते हुए सभी संस्थाओं को धन्यवाद दिया और बहनों को अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहने का आह्वान किया। गणगौर चेयरपर्सन रेखा सिंघी ने गणगौर की ओर से स्वागत किया। रजत मंत्री हेमंत दुगड़ ने अपने विचार व्यक्त किए। गणगौर संयोजक विनोद ओ जैन ने बताया कि महिला बेटी, पत्नी, माँ होते हुए परिवार के लिए ही ज्यादा ध्यान देती है। अपने स्वास्थ्य पर ध्यान नही दे पाती। महिला शक्ति की मातृत्व भावना का सम्मान करते हुए कहा कि गणगौर उन मातृत्व शक्ति की सेवा के लिए ऐसे शिविरों का आयोजन करता आ रहा है और यह इस वर्ष का चौथा शिविर है। मंच संचालन डॉ संतोष नाहर, विनीता गेलडा और रक्षा आच्छा ने किया। आभार ज्ञापन नम्रता सेठीया ने दिया।

मेडिकल केम्प में वी एस हॉस्पिटल एवं एंडरसन की टीम व जैन मेडिकल के डाक्टर द्वारा जाँच की गई। इस आयोजन में महिला मण्डल की संयोजिका संतोष नाहर, वनीता गेलड़ा, नम्रता सेठिया, रक्षा आच्छा के साथ पूरी टीम का श्रम नियोजन रहा। केम्प में 51 महिलाओं ने जाँच करवाई। स्थान उपलब्ध करवाने के लिए साहूकारपेट ट्रस्ट बोर्ड के प्रति आभार व्यक्त किया।

नरेंद्र श्रीश्रीमाल बने रोटरी क्लुब टी नगर के अध्यक्ष, शपथ ग्रहण आज

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

चेन्नई। मेडीसेल्स समूह के चेयरमैन उद्योगपति एवं समाजसेवी नरेंद्र श्रीश्रीमाल वित्त वर्ष 2024-25 के लिए रोटरी क्लब टी नगर के अध्यक्ष चुने गए हैं। श्रीश्रीमाल रविवार को गिंडी स्थित आईटीसी ग्रैंड चोला में शाम 6 बजे अध्यक्ष पद की शपथ लेंगे।

39वें अध्यक्ष के रूप में शपथ ग्रहण समारोह में मुख्य अतिथि रोटेरियन महावीर बोथरा होंगे।

खागा पदाधिकारियों ने रेलवे राज्य मंत्री से की मुलाकात

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बेंगलूरु। कर्नाटक होजरी एवं गारमेंट एसोसिएशन के पदाधिकारियों ने केन्द्रीय राज्यमंत्री रेल एवं जलशक्ति मंत्री वी सोमन्ना से मुलाकात की। सचिव कैलाश बालर ने प्रवासियों की रेल आवश्यकता के बारे में विस्तार से बताया। संयुक्त सचिव बिशनसिंह विराणा ने राजस्थान की ओर जाने वाली रेलगाड़ियों में समय रहते हुए भी कम्फर्म टिकट न मिलने की समस्या से अवगत कराया। पदाधिकारियों ने बताया कि बेंगलूरु एक व्यवसायिक हब है और देशभर के अलग-अलग हिस्सों से व्यापारियों का आवागमन होता है, इसलिए बेंगलूरु से मुंबई के लिए वंदे भारत रेल चलाई जाएं। रेलमंत्री ने खागा के पदाधिकारियों की समस्याओं व सुझावों को गंभीरता से लेते हुए शीघ्र ही हल करने का आश्वासन दिया।

हिंसक, निंदित व राज्य-विरुद्ध व्यापार नहीं करें : डॉ. दिलीप धींग

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

चेन्नई। जैन विश्वभारती संस्थान (मानित विश्वविद्यालय), लाडनूं के तत्वावधान में भारत का गौरव 'प्राकृत भाषा एवं साहित्य' विषयक मासिक ई-व्याख्यानमाला का तीन वर्षीय पूर्णता पर 36वां व्याख्यान 29 जून को हुआ। मुख्य वक्ता साहित्यकार डॉ. दिलीप धींग ने 'प्राकृत आगमों में आर्थिक विकास के स्रोत और उनकी सामाजिक उपादेयता' विषय पर लंबा व्याख्यान दिया। विश्वविद्यालय के प्राकृत एवं संस्कृत विभाग की ओर से आयोजित व्याख्यान में उन्होंने कहा कि आगम साहित्य में आश्चर्यजनक आर्थिक जानकारियां मिलती हैं।

डॉ. धींग ने कहा कि उपासकदशांग और राजप्रश्नीय सूत्र में धन का चार भागों में वर्गीकरण है, जिसमें एक भाग व्यापार में निवेश भी है। यह धन का ऐसा उपयोग है, जिससे रोजगार का सृजन और बेरोजगारी का निवारण किया जा सकता है। अतः धन की तीन नहीं, चार गतियां होती हैं- निवेश, दान, भोग और नाश। अभुषा फाउंडेशन से प्रकाशित अपने ग्रंथ मूल्यात्मक अर्थशास्त्र का उल्लेख करते हुए डॉ. धींग ने कहा कि भगवान महावीर के उपासक सार्थवाह दूसरों को व्यापार में सहयोग करते और आगे बढ़ाते थे। आगम साहित्य में भगवान महावीर युगीन समुद्री मार्ग से व्यापार के रोमांचक वर्णन मिलते हैं। उन्होंने कहा कि वर्तमान में न्यासिता (ट्रस्टीशिप) का विचार भगवान महावीर के अपरिग्रह व्रत का ही रूप है। कमल नौलखा के प्रश्न के उत्तर में डॉ. धींग ने कहा कि आगमिक आचार संहिता हिंसक, निंदित और राज्य-विरुद्ध व्यापार का निषेध करती है।

समणी डॉ. संगीत प्रज्ञा ने विषय प्रवर्तन करते हुए डॉ. धींग का स्वागत किया। डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने डॉ. धींग का परिचय दिया। प्रो. दामोदर शास्त्री ने डॉ. धींग के व्याख्यान को उपादेय बताया और कहा कि आज नया सुनने को मिला। विभागाध्यक्ष प्रो. जिनेन्द्र जैन ने संयोजन किया। आरंभ में डॉ. प्रेमलता ने महाप्रज्ञ अष्टक से मंगलाचरण किया। अंत में डॉ. सब्यसाची षडंगी ने संस्कृत में धन्यवाद दिया। व्याख्यान में देश-विदेश के श्रोता जुड़े।

सुन्दरकांड दक्षिण भारत राष्ट्रमत

तिरुपुर में शनिवार को बालाजी के दीवाने मंडल द्वारा दसवां मासिक सुन्दर कांड पाठ रायपुरम के गणेश मंदिर में किया। अध्यक्ष शिला शाह ने बताया कि पंडित सुनिल दाधीच द्वारा सुबह 10.30बजे गणेश वन्दना एवं ज्योत के साथ संगीतमय सुन्दरकाण्ड मीठे मीठे भजनों के साथ शुरु किया। पाठ में मंडल की ओर से अध्यक्ष शिलाशाह एवं पदाधिकारी सरोज पित्ती, चंदा डिडवानिया, मंजु पारस, अंजना शर्मा, तारा शर्मा, भगवती शर्मा, काफी संख्या मे महिलाओं सुन्दरकाण्ड पाठ का आनंद लिया। दोपहर में महाआरती के बाद सभी ने महाप्रसाद पाया। मंडल द्वारा प्रत्येक महीने में एक सामूहिक सुन्दरकांड का पाठ किया जाता आ रहा है।

भंडारी जैन कॉलेज के वार्षिकोत्सव में सांस्कृतिक कार्यक्रम की रही धूम

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बेंगलूरु। शहर के सीबी भंडारी जैन कॉलेज सभागार में वर्ष 2023-24 के लिए वार्षिक दिवस समारोह का आयोजन किया गया। इस मौके पर मुख्य अतिथि के रुप में दोहरी आवाज में गाने वाले डॉ. अनिल कुमार, संघ के अध्यक्ष चंपालाल भंडारी, सचिव चंपालाल जैन, कोषाध्यक्ष अशोक भंडारी ने दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम की शुरुआत की। मुख्य अतिथि अनिल कुमार ने कन्नड़ और हिंदी गीतों की प्रस्तुति से दर्शकों का मनोरंजन किया। अध्यक्ष चंपालाल भंडारी ने सभी का स्वागत किया। प्राचार्य डॉ. आशा गणेश ने कालेज की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुति की। इसके बाद विद्यार्थियों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुदि दी। समारोह का मुख्य आकर्षण रामायण और पर्यावरण पर आधारित नृत्य नाटिकाएं रहीं। कार्यक्रम में ब्लैक स्प्लेंडर, एक्रा इंस्पिरेशन और रॉयल हेरिटेज थीम पर फैशल शो का आयोजन किया। सांस्कृतिक और साक्षरता कार्यक्रम के विजेताओं को पुरस्कार, ट्रॉफी और प्रमाण पत्र से सम्मानित किया गया।

धर्म का अपमान करने वालों पर कठोर कार्यवाही हो : आचार्य विमलसागरसूरी

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

मैसूरु। शनिवार को नजरबाद स्थित आदिश्वर वाटिका के प्रांगण में विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए आचार्य विमलसागरसूरीश्वरजी ने कहा कि वाणी स्वतंत्रता के नाम पर आजकल लोग धर्म और साधु-संतों पर अनर्गल टिप्पणियां कर रहे हैं। सोशल मीडिया में वे बेहद गंदी तथा आपत्तिजनक बातें लिख और बोल रहे हैं। इस प्रकार आराध्य भगवान और धर्म के सिद्धांतों का अपमान असह्य व आघातजनक लगता है।

ऐसे लोगों पर तत्काल कठोर कार्यवाही होनी चाहिये। यह अत्यंत दुःख का विषय है कि जगह-जगह पुलिस डिपार्टमेंट अपराधियों पर शिकायत लिखने में आनाकानी करती है। पुलिस शिकायतकर्ताओं का सहयोग करने के बजाय उन्हें उलझाती और धमकाती है। इससे अपराधी अधिक मजबूत बन रहे हैं। उनका साहस बढ़ रहा है। अपराधी समझ गये हैं कि कानून और पुलिस हमार कुछ नहीं बिगाड़ सकती। स्वस्थ और अपराधमुक्त सामाजिक व्यवस्था के लिये यह अत्यंत घातक तथ्य है। अपराधियों का फलना-फूलना किसी के भी लिए हितावह नहीं है।

जैनधर्म और समाज से संबंधित विभिन्न राज्यों के अनेक मुकदमों को संभाल रहे आचार्य विमलसागरसूरीश्वरजी ने आगे कहा कि साइबर क्राइम के मुकदमों के कानून और विभाग बहुत कमजोर हैं। वे अपराध और अपराधी पर अंकुश लगाने में नाकाफी हैं। पिछले कुछ वर्षों से गुजरात में कुछ लोग निरंतर जैन तीर्थंकरों और जैन साधुओं के बारे में फूहड़, अश्लील व बेहद गंदी बातें लिखते जा रहे हैं। अनेक वर्षों से ऐसे लोगों पर साइबर क्राइम में किये गये मुकदमें लंबित पड़े हैं।बड़े-बड़े अधिकारियों तक लगाई गई गुहार भी निष्फल रही है। अब वे अपराधी और अधिक मजबूत हो गये लगते हैं। सज्जनों की कोई नहीं सुनता, बदमाशों की सब जगह चल जाती है। इसलिये अब जैन समाज जगह-जगह सड़कों पर उतर रहा है। धरनों पर बैठ रहा है, लेकिन अब तक अपराधियों पर कठोर कार्यवाही नहीं हो रही।

धर्मसभा में कल्याण मित्र वर्षावास समिति के कांतिलाल चौहान, अशोक दांतेवाड़िया, भंवरलाल लुंकड़, रमेश श्रीश्रीमाल, प्रवीण दांतेवाड़िया, वसंत जैन, भोजराज जैन आदि बड़ी संख्या में गणमान्य लोग उपस्थित थे।

केरल के मुख्यमंत्री की बेटी वीणा विजयन की कंपनी को बिना किसी सर्विस के दिए पैसे : ईडी

कोच्चि। ईडी ने दोहराया कि कोच्चि स्थित खनन कंपनी कोचीन मिनरल्स एंड रूटाइल लिमिटेड (सीएमआरएल) ने वीणा विजयन की आईटी कंपनी एक्सालॉजिक सॉल्यूशंस को बिना कोई सर्विस दिए सॉफ्टवेयर सेवाओं के नाम पर 1.72 करोड़ रुपये का भुगतान किया था। ईडी ने हाल ही में केरल हाईकोर्ट में सीएमआरएल के खिलाफ मनी लॉन्ड्रिंग एक्ट के तहत संज्ञेय अपराध करने के आरोप में दायर एक बयान में यह खुलासा किया। वीणा विजयन की आईटी फर्म को मोटी रकम मिलने का मामला पहली बार पिछले साल एक मीडिया रिपोर्ट में सामने आया था। इसके बाद कांग्रेस विधायक मैथ्यू कुझालनदान ने मामले को आक्रामकता से उठाया। मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (माकपा) के शीर्ष नेताओं ने सभी आरोपों को निराधार बताते हुए पूरे मामले को 'दो पेशेवर कंपनियों के बीच व्यापारिक सौदा' करार दिया। हालांकि, मैथ्यू कुझालनदान अपने रुख पर अड़े रहे।

जीव की गति और अगति का ज्ञान करना जरूरी : साध्वीश्री उदितयशा

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बेंगलूरु। साध्वीश्री उदितयशाजी कोरमंगला से विहार कर शांतिनगर स्थित हेरिटेज सिग्नेचर अपार्टमेंट पहुंची जहां तेरापंथ सभा, युवक परिषद, महिला मंडलएवम शांतिनगर से श्रावक श्राविकाओं ने उनका स्वागत किया। प्रवचन कार्यक्रम में साध्वीश्री ने श्रोताओं को मोक्ष की यात्रा के पड़ावों की चर्चा करते हुए प्रथम पड़ाव के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि जीव की गति और अगति का ज्ञान करना जरूरी है। ज्ञान हमारी इस यात्रा का प्रथम पड़ाव है,जब तक हमें ज्ञान नहीं होगा हमारी क्रिया भी सम्यक नहीं हो पाएगी। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष पारसमल भंसाली ने सबका स्वागत किया। तेयुप मंत्री राकेश चोरडिया, कन्हैयालाल सिंघी, जितेंद्र कोचर ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन जितेंद्र घोषल ने किया।

आचार्य जिनमणिप्रभसूरी के संयम स्वर्णोत्सव पर सामूहिक सामायिक व अन्नदान

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बेंगलूरु। शहर के बसवनगुड़ी स्थित जिनकुशलसूरी जैन दादावाड़ी ट्रस्ट के तत्वावधान में खरतरगच्छ युवा एवं महिला परिषद द्वारा मुनिश्री मलयप्रभसागरजी व साध्वीश्री स्वर्णजनाश्री जी.की प्रेरणा से खरतरगच्छाधिपति आचार्यश्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी के 51 वाँ संयम स्वर्णोत्सव के उपलक्ष्य में सामूहिक सामायिक सहित गुणानुवाद सभा व सामूहिक आयंबिल एवं जरूरतमंद व्यक्तियों के लिये घर घर से बनाये भोजन पैकेट का वितरण किया गया। इस कार्यक्रम में युवा परिषद के पंकज बाफना, विकास पारख, विकाश खटोड़, महिला परिषद की किरण ललवाणी, रेखा चोपड़ा, नंदा बाफना सहित संघ व ट्रस्ट के अनेक पदाधिकारी उपस्थित थे। धन्यवाद ज्ञापन महिला परिषद की मंत्री रेखा चोपड़ा ने दिया। यह जानकारी युवा परिषद के मंत्री विकाश खटोड़ द्वारा दी गयी।

Published by Bhupendra Kumar on behalf of New Media Company, Arihant Plaza, 2nd Floor, 84-85, Wall Tax Road, Chennai-600 003 and printed by R. Kannan Aditya at Deviyin Kanmani Achagam, 246, Anna Salai, Thousand Lights, Chennai-600 006.
Regn No. RNI No. : TNHIN / 2013 / 52520 **Editor : Bhupendra Kumar** (Responsible for selection of news under PRB Act.). Group Editor - Shreekant Parashar.
Reproduction of any matter from this newspaper in whole or in part or any such manner without prior written permission from the publisher is strictly prohibited and punishable by law.